संपर्क भाषा भारती

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, दिसंबर—2022, RNI-50756

सहयोग 60/-

अपनी बात...

मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार स्वर्गीय डॉ लक्ष्मी नारायण लाल जी के लेखन की समस्त साहित्यिक सामग्री एवं व्यक्तिगत पत्र मुझे प्राप्त हुए।

पत्र, कांता भारती के लिखे हुए। पत्र, डॉ धर्मवीर भारती के लिखे हुए। पत्र मोहन राकेश के लिखे हुए। पत्र जो नासिरा शर्मा को लिखे गए। पत्र जो पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर को लिखे गए। पत्र जो घनश्यामदास बिड़ला जी को लिखे गए।

उनके समस्त नाटक, एकाँकी, कहानियाँ, उपन्यास, हस्तलिखित पांडुलिपियाँ, प्रकाशकों के पत्र सब कुछ.....फिलहाल इन चित्रों से ही इनकी गंभीरता समझें। इन्हें पुनः प्रकाशित करने की ज़िम्मेदारी .....

सादर,
सुधेन्दु ओझा

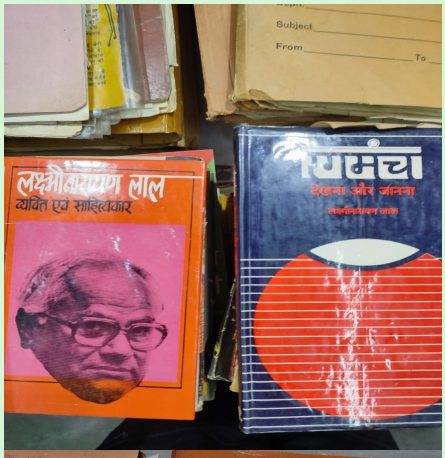

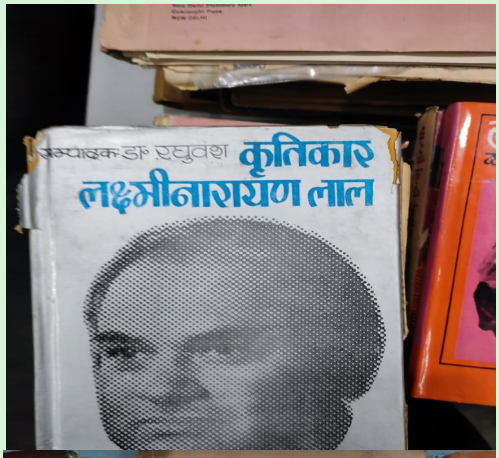

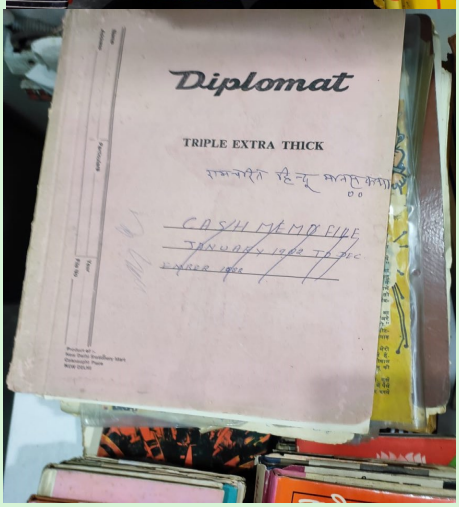

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

अनुक्रमणिका दिसंबर—2022

क्रम सं:	शीर्षक :	लेखक :	पृष्ठ संख्या :
1	संपादकीय		2
2	कौन करेगा सोशल मीडिया की निगरानी	सोनम लववंशी	4-5
3	कविता	डॉ राजीव गुप्ता	6
4	विजय कुमार-अंजलि सम्मानित	समाचार	6
5	मकड़ी का जाल (लघुकथा)	अर्विना गहलौत	7
6	दो लघुकथाएँ	चंद्रेश छतलानी	7
7	विभिन्न संस्कृतियों में नववर्ष	आकांक्षा यादव	8-14
8	कविता	संदीप मिश्रा 'सरस'	15
9	कविता	रमेश मनोहरा	15
10	कविता	प्रो शरद नारायण खरे	15
11	दो गीत	डॉ मनोहर अभय	16
12	तकिया चोर (कथा)	रामानुज अनुज	17-18
13	ईलाज (लघुकथा)	चंद्रेश छतलानी	18
14	राष्ट्र प्रथम जिनका युगधर्म	चन्द्र कान्त पाराशर	19-21
15	कविता	विकास तिवारी	21
16	हीरा	प्रियंका त्रपठी पाण्डेय	22-23
17	कविता	केशव शरण	23
18	लड्डू गोपाल (लघुकथा)	अर्विना गहलौत	24
19	नाम है लक्ष्मण	ब्रजेश श्रीवास्तव	24
20	गीत	शिवानंद सिंह सहयोगी	25
21	एक हाथ की दूरी (लघुकथा)	ज्योत्सना सिंह	25
22	सौ का नोट (कहानी)	दीपक कुमार	26-27
23	अन्तर्नाद : लंबी कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'	27-29
24	पिताजी की साइकिल	गोवर्धन दास बिन्नाणी	28-29
25	पुस्तक समीक्षा	डॉ आर के नीरद	30-31

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

आखिर कौन करेगा सोशल मीडिया की निगरानी?

सोनम लववंशी

आज हम 21वीं सदी के उस मुहाने पर खड़ें हैं। जहां विज्ञान की बदौलत मंगल और चांद पर फतह की बात होती है। टेक्नोलॉजी की नित नई उपलब्धि से दुनिया हथेली में सिमट कर रह गई है, लेकिन इस टेक्नोलॉजी ने हमारे आसपास से क्या कुछ नहीं छीना है? गौर करेंगे तो हम देखते हैं कि इसी तकनीक ने बच्चों की मासूमियत को छीन लिया है! बच्चें समय से पहले बड़े हो रहें हैं। इतना ही नहीं इसी तकनीक ने अब मानवीय मूल्यों से भी खेलना शुरू कर दिया है। जो एक सभ्य समाज के लिए बेहद दुखद और त्रासदीपूर्ण है। ऐसे में तकनीक ने भले हमें सक्षमता प्रदान की है, लेकिन इसी सक्षमता के साथ हम सभी मानसिक रूप से रुग्ण बनते जा रहे हैं। आज हमारे टीनएजर्स जिन्हें हम नाबालिग कहते हैं। वो इसी तकनीक की वज़ह से मानसिक रूप से कमजोर और दूषित मानसिकता के शिकार हो रहें हैं। उनके भीतर अपराधिक प्रवृत्ति जन्म ले रही है। पिछले दिनों बलात्कार की दो ऐसी जघन्य घटनाएं घटी। जिसने इस बात पर बल दिया कि समय रहते अगर तकनीक का इस्तेमाल सही तरीके से नहीं हुआ और तकनीकी दौर में बढ़ते सोशल प्लेटफॉर्म पर कड़ी निगरानी तंत्र नहीं रखा गया, तो हमारी युवा पीढ़ी तेजी से मानवीय मूल्यों को दरकिनार करते हुए अपराध के दलदल में फंसती चली जाएगी।

बीते दिनों मध्यप्रदेश के गुना में हुई बलात्कार की घटना ने इस बात पर मुहर लगा दी कि बढ़ते अपराधों से अब बाल मन भी अछूता नहीं बचा! अनगिनत क़ानून होने के बावजूद अश्लील कंटेंट की उपलब्धता आसानी से संभव है। गुना में दसवीं की छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना जितनी हतप्रभ करने वाली थी। उससे अधिक चौंकाने वाली बात यह रही कि इस जघन्य मामले में शामिल अधिकतर लड़के नाबालिग थे। उन्होंने पुलिस की जांच में इस बात को क़ुबूल किया कि उन्हें अश्लील वीडियो देखने की लत थी। अब सोचिए अगर समाज के नाबालिग बच्चे अगर अश्लील कंटेंट की लत के शिकार हो रहें हैं, तो फिर समाज किस दिशा में जा रहा है। इस कृत्य के बाद कई सवाल खड़े होते हैं। जिनके जवाब सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को ढूढ़ने होंगे, वरना हम ऐसी अंधेरी दुनिया की तरफ बढ़ जाएंगे। जहां से हमारे बच्चे भविष्य की उम्मीद नहीं, बल्कि समाज के लिए नासूर बनते चले जाएंगे! गुना की घटना कोई पहली घटना नहीं, जिसमें नाबालिग बच्चे ऐसे कृत्यों में सम्मिलित हो, बल्कि अक्टूबर महीने में छत्तीसगढ़ में 32 वर्षीय महिला स्वास्थ्य कर्मी के साथ हुए दुष्कर्म में भी नाबालिग शामिल थे। ऐसे में सवाल उन क़ानूनों पर भी उठता है। जो जिम्मेदार संस्थाओं द्वारा लागू किए गए हैं और उनकी प्रासंगिकता पर भी सवाल खड़े होते हैं।

हाल ही में दो घटनाएं ऐसी हुई, जिसमें नाबालिगों को यौन अपराध का दोषी पाया गया! दोनों ही मामलों में उनके बयान थे कि उन्हें मोबाइल फोन पर अश्लील कंटेंट देखने की आदत है! दरअसल, उनके अपराध का मूल कारण भी यही है। इंटरनेट का सस्ता होना, हर बच्चे के हाथ में मोबाइल और उसमें अनियंत्रित कंटेंट की उपलब्धता ने एक पूरी पीढ़ी के लिए खतरा खड़ा कर दिया। यौन अपराध की ये घटनाएं तो एक संकेत है कि आगे क्या हो सकता है! लेकिन, इस पर काबू कौन करेगा? सरकार, समाज या फिर परिवार! आखिर किसी को तो ये जिम्मेदारी लेना होगी। क्योंकि, भटकते क़दमों को किसी को तो रोकना ही होगा!

बिडम्बना देखिए कि अश्लील वीडियो और फोटो देखने, डाउनलोड कर मोबाइल में रखने और वायरल करने पर आईटी एक्ट के अंतर्गत तमाम धाराओं में सजा का प्रावधान है। जिसमें आईटी एक्ट की धारा- 67 के तहत पोर्न कंटेट देखने, डाउनलोड करने और वायरल करने पर पहली बार 3 साल की सजा और 5 लाख रुपए जुर्माना है। वहीं, दूसरी बार पकड़े जाने पर 5 साल की सजा और 10 लाख रुपए जुर्माना है। इतना ही नहीं 67 (ए) के तहत पोर्न कंटेट मोबाइल में रखने, वायरल करने पर पहली बार पकड़े जाने पर 5 साल की सजा और 10 लाख रुपए जुर्माना होगा और सरकार की तरफ से भी आए दिन ऐसी अश्लील साइट अक़्सर बैन की जाती हैं। बावजूद इसके ये कारोबार तेजी से फल-फूल रहा है। वैसे बढ़ती टेक्नोलॉजी के दौर में यह कहें कि अपराध भी बेलगाम हो रहे हैं। यह कहना गलत नहीं होगा, क्योंकि जिस तरह से अपराधों का सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर महिमा मंडन किया जाता है, उससे बच्चे भी अछूते नहीं रहे। फिर चाहे वह पोर्न साइड पर जाकर बच्चों का वीडियो कंटेंट देखना हो या फिर ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अश्लील फ़िल्म देखना। गुना में हुई घटना में शामिल बच्चों को भी अश्लील वीडियो देखने की लत थी। वे कच्ची उम्र में ही दूषित मानसिकता के फेर में पड़ गए थे। कहने को तो ये सभी बच्चे समृद्ध किसान परिवार से आते हैं, लेकिन अश्लील वीडियो की लत ने इन्हें अपराधी बना दिया। इन्हें सोशल मीडिया ने बिगाड़ दिया। आज ये सभी आरोपी जेल में है और इन्हें सजा भी मिलना तय है। पॉक्सो एक्ट के तहत इन पर मुकदमा भी दर्ज हो चुका है। कुछ साल जेल की सींखचों के भीतर रहने के बाद फिर ये सभी

आरोपी बाहर होंगे। बाहर आकर ये किस तरह के समाज का निर्माण करेंगे, ये बात सिर्फ सोची ही जा सकती है! बात सिर्फ इन नाबालिग अपराधियों की ही नहीं। अपितु हर दिन लाखों युवाओं के मन को सोशल मीडिया टूल्स जिस तरह दूषित कर रहे हैं, चिंता का मामला वो है। बच्चे न केवल अश्लील कंटेंट देख रहे हैं, बल्कि आपराधिक प्रवृत्ति में भी शामिल हो रहे हैं।

कहने को तो फिल्मों को समाज को आईना कहा गया है, लेकिन अब यह परिभाषा बदल रही है। अब फिल्म, और धारावाहिकों को देखकर बच्चे बड़ी-बड़ी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। ऐसे में फ़िल्म जगत को भी देखना होगा कि वह किस तरह का कंटेंट बनाए जिससे स्वस्थ समाज की नींव रखी जा सके। साथ ही परिवार की भी यह जिम्मेदारी है कि वह बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान दे। उन पर निगरानी रखे कि वह अपने मोबाइल फोन में क्या देख रहे हैं? एक आंकड़े की बात करें तो वर्ष 2020 में लॉकडाउन के दौरान पोर्न कंटेट कहीं ज्यादा देखे गए हैं। 'लेट्स ओटीटी' की एक रिपोर्ट के अनुसार एमएक्स प्लेयर पर जुलाई 2020 में 'मस्तराम' को एक दिन में 1.10 करोड़ बार देखा गया। मई महीने में एकता कपूर के ऑल्ट बालाजी ओटीटी के दर्शकों की संख्या में 60 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। अब ऐसे में इन कहानियों और प्लेटफार्म के माध्यम से क्या परोसा जा रहा, इससे सभी वाकिफ हैं और इन्हें देखने वालों में स्वाभाविक रूप से नाबालिग बच्चे भी शामिल है।

कोरोनो काल के बाद दुनिया ने भले ऑनलाइन प्लेटफॉर्म की तरफ कदम बढ़ाएं हैं, लेकिन इस दिशा में बड़ा ही फूँक-फूँककर कदम रखने की जरूरत है। क्योंकि, आज छोटी उम्र के बच्चों के हाथ में भी मोबाईल फोन आ गए। जिन पर कहीं कोई निगरानी नहीं है कि बच्चे क्या देख और सीख रहे हैं। यह कोई नहीं जानता है। एक कमरे में होकर भी परिवार के सदस्य साथ नहीं है, सब अपने मोबाइल में व्यस्त हैं। ऐसे में बच्चे भी मोबाइल में ही व्यस्त होकर रह गए है। पढ़ने-लिखने की उम्र में ये बच्चे अपराध करने के नए-नए तरीके सीख रहे हैं। सामाजिक वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। ऐसे में क्या इन अपराधों में शामिल बच्चों को जेल भेजना ही समस्या का समाधान है! सोचिए, जिस कच्ची उम्र में बच्चों को संस्कार सीखना चाहिए, व्यक्तित्व का निर्माण करना चाहिए। उस उम्र में अपराध के तौर तरीके सीख रहे हैं। ऐसे में बाल मन पर नकारात्मक असर होना स्वाभाविक है। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, लिंक्डइन, पिंटेरेस्ट, माइस्पेस और साउंड क्लाउड जैसे सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग के आने के पहले भी समाज में अपराध होते रहे हैं। बेलगाम इंटरनेट ने अब इन अपराधों में कई गुना इज़ाफ़ा करने का काम किया है। अपराधों की संख्या इंटरनेट की स्पीड से बढ़ रही है। बलात्कार, साइबर बुलिंग, साइबर स्टॉकिंग और सार्वजनिक जीवन में जाने-माने व्यक्तियों की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाने जैसे अपराध अब आम हो चलें हैं। एक रिपोर्ट कहती है कि कॉलेज जाने वाले 82% युवा औसतन दो घंटे रोज सोशल मीडिया पर बिता रहे हैं। अच्छी-बुरी चीज़ों को ग्रहण कर रहे हैं।

इंटरनेट के सस्ता होने के कारण इस लत में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। देश-दुनिया में मोबाइल की लत से छुटकारा दिलाने की कोई नीति नहीं है। इंटरनेट पर क्या देखा जा रहा है? कोई पता लगाने वाला नहीं है, यह खतरनाक स्थिति है। यह सब तब है, जब स्कूल स्तर पर बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा देने में मप्र जैसा प्रदेश, देश में सबसे पीछे है। प्रदेश के सिर्फ 3 फीसदी स्कूल ही ऐसे हैं, जिनमें बच्चों के लिए कम्प्यूटर डिवाइस हैं। जबकि, 11 फीसदी स्कूलों में इंटरनेट सुविधा तो है, लेकिन यह अभी विद्यार्थियों के बजाए आधिकारिक कार्य के लिए है। ऐसे में इंटरनेट की उपलब्धता से पहले इसके इस्तेमाल की नीति बहुत जरूरी है। इसके लिए सरकार और समाज दोनों को आगे आना होगा। घर परिवार में बच्चे इंटरनेट पर क्या देख रहे है? इसकी निगरानी परिवार के सदस्यों को भी करना होगी। तभी तकनीक

(1)

तितलियों के पर कतरने जा रहे हो,
फिर भला यूँ आप क्यों इतरा रहे हो।

फूल बोला मुस्करा कर एक दिन,
ज़िंदगी के गीत रोकर गा रहे हो।

एक कश्ती जब फँसी मझधार में,
फ़लसफ़ा क्यों मौत का समझा रहे हो।

मुश्किलों से जूझ कर वह रो दिया,
दोस्त होकर छोड़ कर यूँ जा रहे हो।

प्रपंच ने हँसकर के छल से यह कहा,
जीत कर कब राजधानी आ रहे हो।

(2)

मुश्किलों में मुस्कराना चाहिए था,
यह हुनर भी तो आना चाहिए था।

वो लगा कर दाँव देखो आ गया है,
दीप आँधी में जलाना चाहिए था।

कह नहीं पाया तो आँसू कह उठे,
दर्द को भी तो छिपाना चाहिए था।

इश्क़ तेरा है अगर इतना जुनूनी,
रूठ जाने पर मनाना चाहिए था।

आपको वो घर तलक पहुँचा गया,
घर में आने का बहाना चाहिए था।

ज़ख्म सह कर क्या तुझे हासिल हुआ,
ज़ख्म उसको भी दिखाना चाहिए था।

इस तरह शोहरत हमारी थी कभी,
मेटने को एक जमाना चाहिए था।

फाड़ कर इन कागज़ों को क्या मिला,
कश्तियाँ इससे बनाना चाहिए था।

दीन-दुनिया की ख़बर कुछ भी रहे न,
इश्क़ में यूँ डूब जाना चाहिए था।

(3)

मछलियों को पानी की जरूरत है,
बचपनों को नानी की जरूरत है।

मोबाइलों का दौर है लेकिन हमें,
एक अच्छी कहानी की जरूरत है।

बुढ़ा गए हैं जो जन्म से ही बच्चे,
दवा मत दो, जवानी की जरूरत है।

जिस्म थक गया तो आत्मा को भी,
जिस्म से अब रवानी की जरूरत है।

दिल की दिल में ही रह गईं हैं हसरतें,
मरके फिर जिंदगानी की जरूरत है।

(4)

बस इतनी मर्यादा रख।
मर कर भी तू वादा रख,

मुश्किल सारी हल होंगी,
मन में अटल इरादा रख।

जीत सुनिश्चित करनी है,
सोच-समझ कर प्यादा रख।

साथ नहीं कुछ जाएगा,
मत इच्छाएं ज्यादा रख।

सुख गर तुझको पाना है,
जीवन अपना सादा रख।

ढूंढ़ हवाओं में खुशबू,
यूँ भी ख्वाहिश नादां रख।

झूठ कहाँ तक जाएगा,
ओढ़ा हुआ लबादा रख।

घर की रौनक हैं बूढ़े,
दादी, प्यारे दादा रख।

डॉ. राजीव गुप्ता

अंबाला के विजय कुमार एवं अंजलि सिफर 'लघुकथा सेवी सम्मान' से सम्मानित

अंबाला : 30 अक्टूबर को सिरसा में हरियाणा प्रादेशिक लघुकथा मंच सिरसा के तत्वावधान में हरियाणा हिंदी साहित्य सम्मेलन का आयोजन संयोजक डॉ. शील कौशिक एवं संरक्षक प्रोफेसर रूप देवगुण के द्वारा किया गया। चार सत्रों में संपन्न हुए इस कार्यक्रम में अंबाला से विजय कुमार, रितु विजय, अंजलि सिफर और पंकज शर्मा ने भाग लिया।

इस अवसर पर अंबाला से पिछले 50 वर्षों से नियमित प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'शुभ तारिका' तथा अंजलि सिफर की पुस्तक 'हेलो जिंदगी' का लोकार्पण किया गया। सम्मेलन में लघुकथा जगत के जाने-माने साहित्यकारों की उपस्थिति में विजय कुमार एवं अंजलि सिफर को 'लघुकथा सेवी सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विजय कुमार एवं अंजलि सिफर ने अपनी-अपनी लघुकथाओं का पाठ भी किया। लघुकथा पाठ के बाद इनकी लघुकथाओं पर पटियाला से आए हुए साहित्यकार श्री योगराज प्रभाकर द्वारा समीक्षात्मक टिप्पणी भी की गई। कार्यक्रम में देश के अनेक राज्यों से आए हुए साहित्यकारों ने भाग लिया।

लघुकथा

मकड़ी का जाला

सृजना आफिस के लिए तैयार हो ही रही थी कि माँ ने उसे पुकारा क्या हुआ मां ? बेटा ललिता मौसी का फोन आया है उन्हें क्या जवाब देना है? मां आप समझती क्यों नहीं ? आपसे पहले भी कई बार तो कह चुकी हूँ। मुझे अभी शादी नहीं करनी है , अभी अभी मैंने नौकरी ज्वाइन की है । आप है की जब देखो शादी की रट लगाए रहती है।

बेटा कुछ तो खयाल करो तुम्हारे पापाजी इसी साल रिटायरमेंट है। मैं चाहती हूँ , रिटायर होने से पहले तुम्हारे हाथ पीले कर दूं।

तुम हो कि कुछ समझना ही नहीं चाहती हो ये क्यों भूल जाती हो तुम्हारी एक छोटी बहन भी तो है ? उसकी पढ़ाई भी पूरी हो गई है।

हमें उसका भी तो ब्याह करना है ।

माँ ! ये भी हो सकता है मेरे ससुराल वालों को मेरा नौकरी करना पसंद ही ना आए।

मैं इस नौकरी को गंवाना नहीं चाहती । मुझे आजाद जिंदगी जीना पसंद है , बंधन में बंधना नहीं चाहती ।

सृजना तुमने जब शादी नहीं करने का फैसल कर ही लिया है।

मेरे ख्याल है, सही उम्र में शादी ब्याह के कार्य सम्पन्न हो जाए, बाकी तुम जैसा उचित समझो।

ऐसा ना हो तुम्हे अपने इस निर्णय पर बाद पछताना पड़े..... फिर ना कहना समझाया नहीं था।

मां ! सुनो मैं दफ्तर के लिए निकल रही हूँ।

ठीक है ,.....अपना ख्याल रखना।

इसी तरह वक्त गुजारने लगा पहले तो बहुत से रिश्ते माँ ने सुझाए लेकिन मुझे तरक्की की राह में शादी रोड़ा ही लगी, मैं हर रिश्ते को ठुकराती चली गई। पापा बीमार रहने लगे।

इधर मेरे लिए रिश्ते आने बंद हो गए। कमरें में जब भी तनहा होती हूँ ... सोचती हूँ मेरे दिल की बात सुनने वाला कोई तो हो ..... मन करता है मुझे भी कोई चाहने वाला हो , लेकिन किससे कहूँ ? क्या पता था एक दिन अकेली पड़ जाऊंगी।

छोट बहन भी अपने घर की हो गई।

मेरी हालत उस मकड़ी की तरह हो गई जो अपने ही बुने हुए जाले में लटकी रहती है।

अर्विना गहलोत

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी की दो लघुकथाएँ

1)

मृत्यु दंड

हज़ारों वर्षों की नारकीय यातनाएं भोगने के बाद भीष्म और द्रोणाचार्य को मुक्ति मिली। दोनों कराहते हुए नर्क के दरवाज़े से बाहर आये ही थे कि सामने कृष्ण को खड़ा देख चौंक उठे, भीष्म ने पूछा, "कन्हैया! पुत्र, तुम यहाँ?"

कृष्ण ने मुस्कुरा कर दोनों के पैर छुए और कहा, "पितामह-गुरुवर आप दोनों को लेने आया हूँ, आप दोनों के पाप का दंड पूर्ण हुआ।"

यह सुनकर द्रोणाचार्य ने विचलित स्वर में कहा, "इतने वर्षों से सुनते आ रहे हैं कि पाप किया, लेकिन ऐसा क्या पाप किया कन्हैया, जो इतनी यातनाओं को सहना पड़ा? क्या अपने राजा की रक्षा करना भी..."

"नहीं गुरुवर।" कृष्ण ने बात काटते हुए कहा, "कुछ अन्य पापों के अतिरिक्त आप दोनों ने एक महापाप किया था। जब भरी सभा में द्रोपदी का वस्त्रहरण हो रहा था, तब आप दोनों अग्रज चुप रहे। स्त्री के शील की रक्षा करने के बजाय चुप रह कर इस कृत्य को स्वीकारना ही महापाप हुआ।"

भीष्म ने सहमति में सिर हिला दिया, लेकिन द्रोणाचार्य ने एक प्रश्न और किया, "हमें तो हमारे पाप का दंड मिल गया, लेकिन हम दोनों की हत्या तुमने छल से करवाई और ईश्वर ने तुम्हें कोई दंड नहीं दिया, ऐसा क्यों?"

सुनते ही कृष्ण के चेहरे पर दर्द आ गया और उन्होंने गहरी सांस भरते हुए अपनी आँखें बंद कर उन दोनों की तरफ अपनी पीठ कर ली फिर भर्राये स्वर में कहा, "जो धर्म की हानि आपने की थी, अब वह धरती पर बहुत व्यक्ति कर रहे हैं, लेकिन किसी वस्त्रहीन द्रोपदी को... वस्त्र देने मैं नहीं जा सकता।"

कृष्ण फिर मुड़े और कहा, "गुरुवर-पितामह, क्या यह दंड पर्याप्त नहीं है कि आप दोनों आज भी बहुत सारे व्यक्तियों में जीवित हैं, लेकिन उनमें कृष्ण मर गया..."

-0-

2)

नया पकवान

एक महान राजा के राज्य में एक भिखारीनुमा आदमी सड़क पर मरा पाया गया। बात राजा तक पहुंची तो उसने इस घटना को बहुत गम्भीर मानते हुए पूरी जांच कराए जाने का हुक्म दिया। सबसे बड़े मंत्री की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई जिसने गहन जांच कर अपनी रिपोर्ट पेश की। राजा ने उस लंबी-चौड़ी रिपोर्ट को देखा और आंखें छोटी कर संजीदा स्वर में कहा, "एक लाइन में बताओ कि वह क्यों मरा?"

सबसे बड़े मंत्री ने अत्यंत विनम्र शब्दों में उत्तर दिया, "हुज़ूर, क्योंकि वह भूखा था।"

सुनते ही राजा की आंखें चौड़ी हो गईं और उसने आंखे तरेर कर मंत्री को देखते हुए कहा, "मतलब... मेरे... राज्य में... कोई... भू...खाथा।" यह कहते समय राजा हर शब्द के बाद एक क्षण रुक कर फिर दूसरा शब्द कह रहा था।

मंत्री तुरंत समझ गया और बिना समय गंवाए उसने उत्तर दिया, "जी हुज़ूर। वह 'भू... खाता'। इसलिए मर गया। यही सच है कि उसने भू ज़्यादा खा लिया था।"

रिपोर्ट में उस अनुसार बदलाव कर दिया गया और उस राज्य में 'भू' नामक एक नए पकवान का अविष्कार हो गया, जो काजू-बादाम और शुद्ध घी से बनाया जाता था।

विभिन्न संस्कृतियों में नव वर्ष के विविध रूप

नव इतिहास की सबसे पुरानी पर्व परम्पराओं में से एक नववर्ष है। नववर्ष के आरम्भ का स्वागत करने की मानव प्रवृत्ति उस आनन्द की अनुभूति से जुड़ी हुई है जो बारिश की पहली फुहार के स्पर्श पर, प्रथम पल्लव के जन्म पर, नव प्रभात के स्वागतार्थ पक्षी के प्रथम गान पर या फिर हिम शैल से जन्मी नन्हीं जलधारा की संगीत तरंगों से प्रस्फुटित होती है। विभिन्न विश्व संस्कृतियाँ इसे अपनी-अपनी कैलेण्डर प्रणाली के अनुसार मनाती हैं। वस्तुतः मानवीय सभ्यता के आरम्भ से ही मनुष्य ऐसे क्षणों की खोज करता रहा है, जहाँ वह सभी दुख, कष्ट व जीवन के तनाव को भूल सके। इसी के तद्नुरुप क्षितिज पर उत्सवों और त्यौहारों की बहुरंगी झांकियाँ चलती रहती हैं।

इतिहास के गर्त में झांकें तो प्राचीन बेबिलोनियन लोग अनुमानतः 4000 वर्ष पूर्व से ही नववर्ष मनाते रहे हैं, उस समय नव वर्ष का ये त्यौहार 21 मार्च को मनाया जाता था जो कि वसंत के आगमन की तिथि भी मानी जाती थी। प्राचीन रोमन कैलेण्डर में मात्र 10 माह होते थे और वर्ष का शुभारम्भ 1 मार्च से होता था। बहुत समय

बाद 713 ई.पू. के करीब इसमें जनवरी तथा फरवरी माह जोड़े गये। सर्वप्रथम 153 ई.पू. में 1 जनवरी को वर्ष का शुभारम्भ माना गया एवं 45 ई.पू. में जब रोम के तानाशाह जूलियस सीजर द्वारा जूलियन कैलेण्डर का शुभारम्भ हुआ, तो यह सिलसिला बरकरार रहा। ऐसा करने के लिए जूलियस सीजर को पिछला साल, यानि, ईसा पूर्व 46 ई. को 445 दिनों का करना पड़ा था। 1 जनवरी को नववर्ष मनाने का चलन 1582 ई. के ग्रेगेरियन कैलेण्डर के आरम्भ के बाद ही बहुतायत में हुआ। दुनिया भर में प्रचलित ग्रेगेरियन कैलेंडर को पोप ग्रेगरी अष्टम ने 1582 में तैयार किया था। ग्रेगरी ने इसमें लीप ईयर का प्रावधान भी किया था। ईसाईयों का एक अन्य पंथ ईस्टर्न आर्थोडाॅक्स चर्च रोमन कैलेंडर को मानता है। इस कैलेंडर के अनुसार नया साल 14 जनवरी को मनाया जाता है। यही वजह है कि आर्थोडाक्स चर्च को मानने वाले देशों रुस, जार्जिया, येरुशलम और सर्बिया में नया साल 14 जनवरी को मनाया जाता है।

आज विभिन्न विश्व संस्कृतियाँ नव वर्ष अपनी-अपनी कैलेण्डर प्रणाली के अनुसार मनाती हैं । हिब्रू मान्यताओं के अनुसार भगवान द्वारा विश्व को बनाने में सात दिन लगे थे। इस सात दिन के संधान के बाद नया वर्ष मनाया जाता है। यह दिन ग्रेगेरियन कैलेण्डर के मुताबिक 5 सितम्बर से 5 अक्टूबर के बीच आता है। इसी तरह

इस्लाम के कैलेंडर को हिजरी साल कहते हैं। इसका नव वर्ष मोहर्रम माह के पहले दिन होता है। इस्लामी कैलेण्डर एक पूर्णतया चन्द्र आधारित कैलेंडर है, जिसके कारण इसके बारह मासों का चक्र 33 वर्षों में सौर कैलेण्डर को एक बार घूम लेता है। इसके कारण नर्व वर्ष प्रचलित ग्रेगेरियन कैलेण्डर में अलग-अलग महीनों में पड़ता है। चीन का भी कैलेण्डर चन्द्र गणना पर आधारित है। चीनी कैलेण्डर के अनुसार प्रथम मास का प्रथम चन्द्र दिवस नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। यह प्रायः 21 जनवरी से 21 फरवरी के बीच पड़ता है।

दुनिया भर में नव वर्ष मनाने का अपना-अपना अंदाज है। ब्रिटेन में लोग नए साल का स्वागत आतिथ्य भाव से करते हैं। मान्यता है कि वर्ष का पहला मेहमान उनके लिए ऐश्वर्य व सौभाग्य लेकर आता है। शर्त यह है कि यह मेहमान पुरुष होना चाहिए। उसके लिए तोहफा लाना अनिवार्य होता है। मेहमान मुख्यद्वार से प्रवेश करता है और अपने साथ पांरपरिक तौर पर रसोईघर का सामान, घर के मुखिया के लिए शराब या आग जलाने के लिए कोयला जैसे तोहफे लाता है। वह पीछे के दरवाजे से बाहर जाता है। तोहफे बगैर उसे घर में आने की इजाजत नहीं होती।

डेनमार्क में लोग नए साल के दिन घर की पुरानी प्लेटों को अपने पड़ोसियों, रिश्तेदारों और दोस्तों के घरों के सामने तोड़ते हैं। इसे दोस्ती और आत्मीयता का प्रतीक माना जाता है। समझा जाता है कि जिस भी घर के सामने सबसे ज्यादा टूटी हुई प्लेटें होती हैं, वह सबसे अधिक प्रिय होता है। मध्य और दक्षिण अमेरिका में इस दिन यहाँ के लोग पीले रंग के कपड़े खरीदते हैं, जो सोने (धातु) का प्रतीक है। पुर्तगाल और स्पेन में लोग नए साल के मौके पर 12

अंगूर खाते है। उनका मानना है ये आगामी 12 महीनों में उनके लिए खुशहाली लाएंगे।

जर्मनी में लोग नये साल के स्वागत के लिए ठंडे पानी में पिघला हुआ सीसा डालते हैं। इससे बनने वाली आकृति भविष्य की जानकारी देती है। यानी अगर दिल का आकार बना तो शादी होगी। गोलाकार आकार बना तो साल सौभाग्यशाली रहने वाला है। इसके अलावा नए साल की पूर्व संध्या पर खाए गए भोजन का कुछ भाग आधी रात तक बचा कर रखा जाता है। मान्यता है कि इससे आने वाले साल में घर में पर्याप्त मात्रा में भोजन सामग्री रहेगी। वहीं चिली में मध्यरात्रि के समय शैंपेन भरे गिलास में सोने की अंगूठी रखी जाती है, जो सौभाग्य का प्रतीक समझी जाती है। फिलीपींस में नए साल के दिन लोग पोलका डाॅट्स (गोल बिन्दुओं) वाले कपड़े पहनते हैं और गोल आकृति का फल खाते हैं। इसे समृद्धि का प्रतीक समझा जाता है। प्यूर्टो रिको में नए साल के मौके पर दरवाजे या बालकनी से ठंडा पानी बाहर फेंका जाता है।

जापान में नए साल को ओसोगात्सु कहा जाता है। इस दिन सभी तरह का कारोबार बंद रहता है। बुरी ताकतों को दूर रखने के लिए इस दिन घर के मुख्यद्वार के ऊपर रस्सी बांधी जाती है। नए साल के आगमन के साथ ही जापानी जोर-जोर से हँसने लगते है। घड़ी में 12 बजने से पहले 108 घंटियाँ यह दिखाने के लिए बजाई जाती है कि इतनी परेशानियों का सफाया कर दिया गया है। आस्ट्रेलिया में नए साल के दिन सार्वजनिक छुट्टी होती है। लोग 31 दिसम्बर की आधी रात से सीटियों, कार के हार्न और चर्च की घंटियाँ बजाना शुरू कर देते हैं और नए साल का स्वागत करते हैं। दक्षिण अफ्रीका में नए साल पर चर्च की घंटियां बजने के साथ ही लोग बंदूक से गोलियां चलाने

लगते हैं।

भारत के भी विभिन्न हिस्सों में नव वर्ष अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है। भारत में नव वर्ष का शुभारम्भ वर्षा का संदेशा देते मेघ, सूर्य और चंद्र की चाल, पौराणिक गाथाओं और इन सबसे ऊपर खेतों में लहलहाती फसलों के पकने के आधार पर किया जाता है। इसे बदलते मौसमों का रंगमंच कहें या परम्पराओं का इन्द्रधनुष या फिर भाषाओं और परिधानों की रंग-बिरंगी माला, भारतीय संस्कृति ने दुनिया भर की विविधताओं को संजो रखा है। असम में नववर्ष बीहू के रुप में मनाया जाता है, केरल में पूरम विशु के रुप में, तमिलनाडु में पुत्थांडु के रुप में, आन्ध्र प्रदेश में उगादी के रुप में, महाराष्ट्र में गुड़ीपड़वा के रुप में तो बांग्ला नववर्ष का शुभारंभ वैशाख की प्रथम तिथि से होता है।

भारतीय संस्कृति में नववर्ष के आरम्भ की पुरानी परम्पराओं में से एक नव संवत्सर भी है। माना जाता है कि जगत की सृष्टि की घड़ी (समय) यही है। इस दिन भगवान ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना हुई तथा युगों में प्रथम सत्ययुग का प्रारंभ हुआ।

'चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमे अहनि।

शुक्ल पक्षे समग्रेतु तदा सूर्योदये सति।।'

अर्थात ब्रह्मा पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना चैत्र मास के प्रथम दिन, प्रथम सूर्योदय होने पर की। इस तथ्य की पुष्टि सुप्रसिद्ध भास्कराचार्य रचित ग्रंथ 'सिद्धांत शिरोमणि' से भी होती है, जिसके श्लोक में उल्लेख है कि लंका नगर में

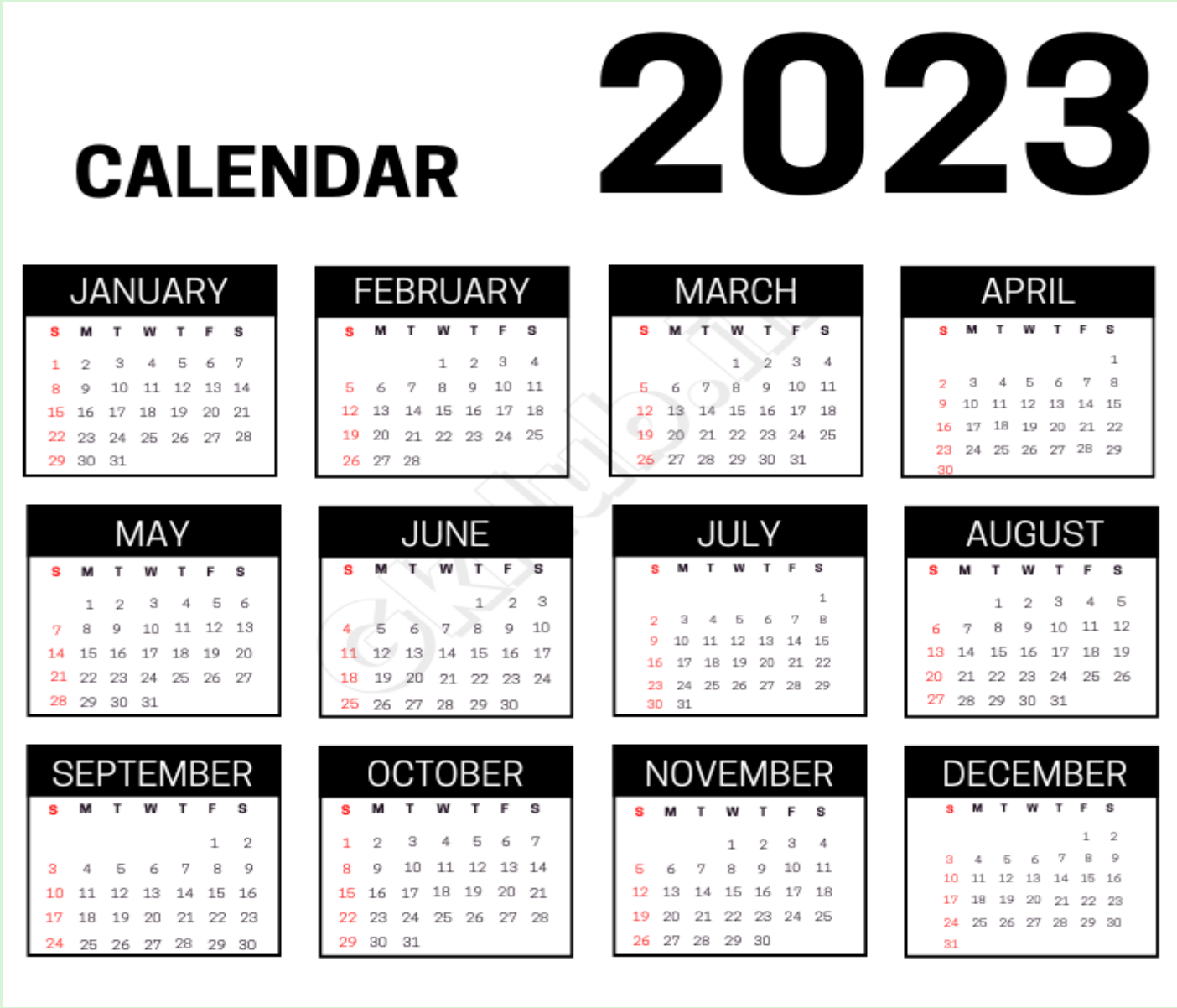

सूर्योदय के क्षण के साथ ही, चैत्र मास, शुक्ल पक्ष के प्रथम दिवस से मास, वर्ष तथा युग आरंभ हुए। अतः नव वर्ष का प्रारंभ इसी दिन से होता है, और इस समय से ही नए विक्रम संवत्सर का भी आरंभ होता है, जब सूर्य भूमध्य रेखा को पार कर उत्तरायण होते हैं। इस समय से ऋतु परिवर्तन होनी शुरू हो जाती है। वातावरण समशीतोष्ण होने लगता है। ठंडक के कारण जो जड़-चेतन सभी सुप्तावस्था में पड़े होते हैं, वे सब जाग उठते हैं, गतिमान हो जाते हैं। पत्तियों, पुष्पों को नई ऊर्जा मिलती है। समस्त पेड़-पौधे, पल्लव रंग-विरंगे फूलों के साथ खिल उठते हैं। ऋतुओं के एक पूरे चक्र को संवत्सर कहते हैं। संवत्सर, सृष्टि के प्रारंभ होने के दिवस के अतिरिक्त, अन्य पावन तिथियों, गौरवपूर्ण राष्ट्रीय, सांस्कृतिक घटनाओं के साथ भी जुड़ा है। रामचन्द्र का राज्यारोहण, धर्मराज युधिष्ठिर का जन्म, आर्य समाज की स्थापना तथा चैत्र नवरात्र का प्रारंभ आदि जयंतियां इस दिन से संलग्न हैं। इसी दिन से मां दुर्गा की उपासना, आराधना, पूजा भी प्रारंभ होती है। यह वह दिन है, जब भगवान राम ने रावण को संहार कर, जन-जन की दैहिक-दैविक-भौतिक, सभी प्रकार के तापों से मुक्त कर, आदर्श रामराज्य की स्थापना की। सम्राट विक्रमादित्य ने अपने अभूतपूर्व पराक्रम द्वारा

शकों को पराजित कर, उन्हें भगाया, और इस दिन उनका गौरवशाली राज्याभिषेक किया गया।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ लगभग सभी जगह नववर्ष मार्च या अप्रैल माह अर्थात चैत्र या बैसाख के महीनों में मनाये जाते हैं। पंजाब में नव वर्ष बैशाखी नाम से 13 अप्रैल को मनाई जाती है। सिख नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार 14 मार्च होला मोहल्ला नया साल होता है। इसी तिथि के आसपास बंगाली तथा तमिल नव वर्ष भी आता है। तेलगू नव वर्ष मार्च-अप्रैल के बीच आता है। आंध्र प्रदेश में इसे उगादी (युगादि=युग+आदि का अपभ्रंश) के रूप मंे मनाते हैं। यह चैत्र महीने का पहला दिन होता है। तमिल नव वर्ष विशु 13 या 14 अप्रैल को तमिलनाडु और केरल में मनाया जाता है। तमिलनाडु में पोंगल 15 जनवरी को नव वर्ष के रुप में आधिकारिक तौर पर भी मनाया जाता है। कश्मीरी कैलेण्डर नवरेह 19 मार्च को आरम्भ होता है। महाराष्ट्र में गुडी पड़वा के रुप में मार्च-अप्रैल के महीने में मनाया जाता है, कन्नड़ नव वर्ष उगाडी कर्नाटक के लोग चैत्र माह के पहले दिन को मनाते हैं, सिंधी उत्सव चेटी चंड, उगाड़ी और गुडी पड़वा एक ही दिन मनाया जाता है। मदुरै में चित्रैय महीने में चित्रैय तिरुविजा नव वर्ष के रुप में मनाया जाता है। मारवाड़ी और गुजराती नव वर्ष दीपावली के दिन होता है, जो अक्टूबर या नवंबर में आती है। बंगाली नव वर्ष पोहेला बैसाखी 14 या 15 अप्रैल को आता है। पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में इसी दिन नव वर्ष होता है। वस्तुतः भारत वर्ष में वर्षा ऋतु की समाप्ति पर जब मेघमालाओं की विदाई होती है और तालाब व नदियाँ जल से लबालब भर उठते हैं तब ग्रामीणों और किसानों में उम्मीद और उल्लास तरंगित हो उठता है। फिर सारा देश उत्सवों की फुलवारी पर नववर्ष की बाट देखता है। इसके अलावा भारत में विक्रम संवत, शक संवत, बौद्ध और जैन संवत, तेलगु संवत भी प्रचलित हैं, इनमें हर एक का अपना नया साल होता है। देश में सर्वाधिक प्रचलित विक्रम और शक संवत हैं। विक्रम संवत को सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने की खुशी में 57 ईसा पूर्व शुरू किया था।

नववर्ष आज पूरे विश्व में एक समृद्धशाली पर्व का रूप अख्तियार कर चुका है। इस पर्व पर पूजा-अर्चना के अलावा उल्लास और उमंग से भरकर परिजनों व मित्रों से मुलाकात कर उन्हें बधाई देने की परम्परा दुनिया भर में है। अब हर मौके पर ग्रीटिंग कार्ड भेजने का चलन एक स्वस्थ परंपरा बन गयी है पर पहला ग्रीटिंग कार्ड भेजा था 1843 में हेनरी कोल ने। हेनरी कोल द्वारा उस समय भेजे गये 10,000 कार्ड में से अब महज 20 ही बचे हैं। आज तमाम संस्थायें इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करती हैं और लोग दुगुने जोश के साथ नववर्ष में प्रवेश करते हैं। पर इस उल्लास के बीच ही यही समय होता है जब हम जीवन में कुछ अच्छा करने का संकल्प लें, सामाजिक बुराईयों को दूर करने हेतु दृढ़ संकल्प लें और मानवता की राह में कुछ अच्छे कदम और बढ़ायें।

आकांक्षा यादव,

पोस्टमास्टर जनरल आवास,

नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी-221002

मो.-09413666599 ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

संदीप मिश्र 'सरस'

ज़िन्दगी के पाठ्यक्रम में इस कदर गड़बड़ हुई है,
आज उत्तर सभ्यता के, प्रश्नवाचक हो गए हैं।

नौकरी छूटी, तो कारें कर्ज वाली छिन गयी हैं,
व्यर्थ सपने बेंचते बाजार ने हमको ठगा है।
नोटिसें आने लगीं, शोरूम के व्यापारियों की,
चमचमाते मॉल के व्यापार ने हमको ठगा है।

ब्याज पर जिनके भवन थे, आज वह फुटपाथ पर हैं,
कल तलक थे दानदाता, आज याचक हो गए हैं।

कारखानों को सदा मजदूर श्रम से सींचते थे,
वक्त बदला तो उन्हीं के द्वार पर ताले जड़े हैं।
स्वार्थ के ही द्वार पर इंसानियत गिरवी पड़ी है,
और वह असहाय होकर आज सड़कों पर खड़े हैं।

गाँव वापस चल पड़े हैं, पेट बाँधे पीठ पर वह,
प्रेम धोखा शब्द, फिर पर्यायवाचक हो गए हैं।

गाँव, जिनको छोड़ बैठे थे, महानगरों की खातिर,
वक़्त की ठोकर लगी तो गाँव फिर से याद आये।
गाँव की पगडंडियाँ, खेतों की मेड़ें याद आईं,
प्रेमपूरित द्वार घर के ठाँव फिर से याद आये।

आपदा में अहमियत समझे, सगे सम्बन्धियों की,
जो कभी निर्लिप्त थे वह भाववाचक हो गए हैं।

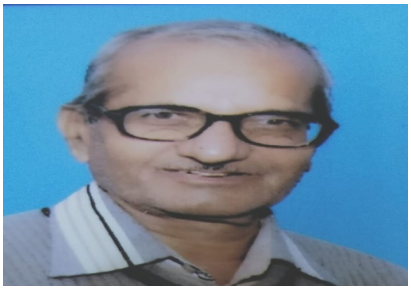

गजल

हो कामयाब अपने ही मकसद में
ताकि बड़े आगे अपने ही कद में

लुटेरे जितने थे सड़कों पे यहाँ
आकर सब बैठ गये है संसद में

रहे हर दुश्मन पर अब पैनी नज़र
ना घुस जाए वो अपनी सरहद में

चीजों को खरीदना है खरीद लों
मिलेगी नहीं फिर बाजार बंद में

पड़ोसी ना लांघे कोई दीवार
यदि घुसे तो मारे उसकी हद में

रिश्वत से है जिसका गहरा नाता
रहता है वहीं आजकल गद-गद में

टूटेगा एक दिन उसका सब गुरुर
चाहे कितना भी बड़ा रहे पद में

वे मंत्री के चमचे हैं चाटुकार भी
लगे रहते हैं उसकी खुशामद में

जब से रमेश बंधा है गृहस्थी से
तब से है नून तेल की कवायद में

रमेश मनोहरा

समरसता के दोहे

समरसता यदि संग है,तो पलता मधुमास।
अपनाकर संवेदना, मानव बनता ख़ास॥

समरसता-आचार तो,है करुणा का रूप॥
जिससे खिलती चाँदनी, बिखरे उजली धूप॥

समरसता सुविचार से,मानव बने उदार।
द्वेष,कपट सब दूर हों, बिखरे नित उपकार॥

अंतर्मन में नम्रता, अधरों पर मृदु बोल।
समरसता करती सदा,जीवन को अनमोल॥

रीति,नीति हमसे कहें,बन तू सद् इनसान।
समरसता देवत्व है, पाए जीवन मान॥

समरसता से नित अधर,पर खिलती मुस्कान।
बिन समरसता ज़िन्दगी,नहिं पाती है आन॥

समरसता उत्कृष्ट नित,जो लाती उजियार।
सच में समरसता बिना,फैले नित अँधियार॥

समरसता-उद्घोष है,रखें नेह का भाव।
संवेदित हो हम रखें,समरसता का ताव॥

समरसता पलती जहाँ,वहाँ रहें भगवान।
समरसता की नीति से ,होता नित यशगान॥

समरसता तो नित्य ही,है चोखा उपहार।
मानव-जीवन को मिले, क़दम-क़दम पर सार॥

समरसता तो सूर्य है,समरसता है चाँद।
मानव मानव से मिले,दीवारों को फाँद॥

समरसता है चेतना,सद् का नया विधान।
समरसता से विश्व का,होता नित उत्थान॥

समरसता गहना लगे,नित्य सँवारे रूप।
धारणकर इसको 'शरद',बन सकता हर भूप॥

-प्रो.(डॉ) शरद नारायण खरे

डॉ. मनोहर अभय के दो गीत

(एक)

फूलों की कतारों में, रख लो
ये गीत हमारी यादों के

ये गीत लिखे थे,बैठ,
तुम्हारे पास कहीं
जब देख रहा
मिठियाया सा
भींना- भींना
मधुमास कहीं
वक्त मिले,
तो पढ़ लेना
ये गीत हमारे वादों के |

सूरज की गर्म उसाँसों ने
पर्वत सुमेरु पिघलाया था
मावस के
कजियर आँचल पर
विधु ने
गोरस छिटकाया था
छल- छल कर
छलक पड़े कलशे
ज्यों भूरे बादल भादों के |

उस, सृजन- स्रष्टि की बेला में
तुमने ली पहली अँगड़ाई
रश्मियाँ
रेशमी नाच रहीं
संध्या सिन्दूर
थी भर लाई
अनुराग- राग की हलचल में
मिट गए रंग
अवसादों के |

जंगल घुस आए शहरों में
सहमी- सिमटी सी गलियाँ हैं
कल क्या होगा ?
सब लगा रहे अटकलियाँ हैं
पर्चे बँट रहे जिहादों के |

(दो)

फिर वही दिन आएँगे
लौट कर

रात चाँदी
सवेरा सुनहरा
सिर मारता दीवार से
कलमुँहा अँधेरा
धूपिया दिन आएँगे
फिर लौट कर |

चक्कियों में
पीसे गए
घुनी ज्वार से
उम्र भर
वंचित रहे
मनभावने
त्यौहार से
उत्सवी
दिन आएँगे
फिर लौट कर |

कौन रोकेगा
उगते हुए दिनमान को
ज्योति की सहेलियाँ
अर्ध्य देतीं
ज्योतिर्मान को
दूधों-धुले दिन आएँगे
फिर लौट कर |

तोड़ दी हैं
वर्जना की श्रंखलाएँ
धूप -बत्ती सी महकतीं
नेह की अभ्यर्थनाएँ
साफ सुथरी
सौगंध के दिन आएँगे
फिर लौट कर |

ढूँढ रही कोकिला
स्वर- बाँसुरी मधुमास की
कनखियों से बात करती
पाँखुरी पलाश की
फागुनी दिन आएँगे
फिर लौट कर |

तकिया चोर

उनकी समझ में कुछ आता है कि नहीं आता, उनके बोलने से कभी आभाष तो नहीं हुआ, लेकिन बीच में बोल जरूर पड़ते थे। यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहता था कि कहने वाले की बात अभी अधूरी है। वे 'यानी के' कहकर बात का रुख मोड़ देते थे। बात भूतकाल की है, लेकिन बिना बदलाव किए ज्यों की त्यों कहें तो जीवित काल की है, आज भी हमारे बीच बहुत से 'यानी के' हैं। इसलिए बताना पड़ रहा है। बताने की आवश्यकता कम मजबूरी अधिक है। यानी के 'उर्फ जुगुत बिहारी' की बरसी पर उनके लड़कों ने भागवत सुनवाई फिर व्याख्यान रख दिया। विषय था, 'समाजसेवी पंडित जुगुत बिहारी पांडेय।'

इस झमेले में मैं भी फँस गया। रिटायर होकर गाँव में रहने की इच्छा से मन भर आया। सुबह सबेरे घर आकर उनका लड़का कह गया था कि, 'चाचा! आप गाँव भर में सबसे पढ़े-लिखे विद्वान आदमी हैं। आपको पिता जी के जीवन-यात्रा पर रोशनी डालनी होगी।'

'रोशनी?'

'हाँ चाचा उनके जीवन भर की उपलब्धियों, क्रियाकलापों और समाज-देश के हित में किए गए उनके कार्यों को बताना होगा।'

'मगर तुम्हारे पिता के क्रियाकलापों के विषय में मुझे मालुम नहीं हैं। उनकी उपलब्धियों में तुम चार भाई और तुम्हारी पाँच बहने हैं, बस इतना ही जानता हूँ।'

'मेरा बड़ा भाई थानेदार है।'

'अरे! वह कब हो गया?'

'चाचा! उसी ने तो इतना बड़ा प्रोग्राम रचा है। बरसी के भीतर भागवत और भाषण कराना

रामानुज अनुज

कोई हँसी खेल तो नहीं होता।'

'बिल्कुल नहीं, बहुत बड़ी बात है।'

वह कहकर चला गया था। थानेदारी की धौंस में आकर भाषण देना अब मेरी मजबूरी हो गई थी। चलते-चलाते उसकी यह बात मेरी मास्टरी को और ललकार गयी थी, 'चाचा आप चालीस साल मास्टरी किए हैं। आप स्कूल में क्या पढ़ाते रहे हैं? कोई जाने तो, माँ कसम चाचा! आपके लिए भी मौका है। अभी तो टेम है, तैयारी कर लो, कल आपको बोलना है, धांसू स्पीच मारिए, ताकि पिता जी आत्मा खुश हो जाए। आप अकेले पढ़े-लिखे वक़्ता हैं।'

'मैं अकेले?' मुझे ताज्जुब हुआ था।

'बाकी पुलिस के लोग हैं।'

मेरी भी इज्जत दांव में लगी थी, इसलिए सीधा सिर हिलाकर हाँ कह दिया। अब सोच-विचार में पड़ा था कि किससे उनके विषय में पूछा जाए। कोई मान्य उपाय दिमाग में चढ़ नहीं रहा था कि लंबे डग भरता हुआ गोकुल नाई आता हुआ दिखाई पड़ गया। मुझे लगा कि इससे जानकारी मिल सकती है, घूमने-फिरने वाला आदमी है। उसे पास बुलाकर मैंने कहा, 'तुम तो कुत्ते की तरह घुमक्कड़ जीव हो, जुगुत बिहारी के बारे में मुझे कुछ बताओ।'

कुत्ते से तुलना किया जाना उसे अच्छा लगा,

वह तपाक से बोला, 'वो तो मर गए, साल भर बीत भी गए अब क्या कहना उनके बारे में।'

'भई परम्परा है, मृतक के विषय में कुछ अच्छा कहने की, उसकी आत्मा खुश होती है।'

वह मेरी बात काटकर बोला, 'भइया जी! उनके लड़के भागवत करामय या परबचन, कौनव फरक नाहीं, वह आदमी तकिया चोर था।'

तकिया चोर मेरे लिए नया शब्द था, मैं हैरानी में पड़ गया, 'गाँव की बोली में नए शब्द कहाँ से घुस गए? चालीस साल की मास्टरी, सैकुलर, हिटलर, बटलर, वेज, नॉनवेज़, दलित, आदिवासी, बाम्हन-बनिया, लाला, पोंडक्री गिनने में चली गई। पढ़ने-पढ़ाने का समय कम ही मिला। जब मिला भी तो, त्रिभुज की तीन टाँगों ने बहुत परेशान किया।'

गोकुल मेरी परेशानी ताड़ गया, वह मुझे बिना किताब खोले पढ़ाने लगा, 'मास्साब! जाने आप लोग कौन-सी किताब पढ़ते-पढ़ाते रहे हैं कि तकिया चोर नहीं जानते? इस देश का हर आदमी तकिया चोर है, मंत्री से लेकर संतरी तक, घर वाली से लेकर घरवाला तक, छछूंदर से लेकर बिलारी तक, सबके सब तकिया चोर।'

मैंने उसे डाँटा, 'बकवास बन्दकर सीधे-सीधे बोलो, तकिया चोर किसे कहते हैं?'

वह भी सौ कैरेट का आदमी निकला, रोष से बोला, 'आप हमें क ख ग घ अंगा, मत सिखाओ। मुझे पता है, गंगा की जेठानी का नाम---अरे मास्साब! तकिया चोर उसे कहते हैं जो न खुद सोए न किसी दूसरे को सोने दे। जुगुत ने किसी को भी आँख भर नींद सोने नहीं दिया। गाँव में जितने भी दंगे-फसाद चल रहे हैं, सब उसी की देन है। लोगों के कान भरना, इसको-उसको भिड़ाना-लड़ाना, यही तो किया है जिंदगी भर----आप ही बताओ, ऐसे तकिया चोर को समाजसेवी कैसे कह दें?'

बात मेरे समझ में आ गई थी, किंतु पंडित जुगुत किशोर को समाजसेवी सिद्ध करना भी आवश्यक था। इसलिए तैयारी में जुट गया हूँ ताकि अपनी तकिया सलामत रहे, जुगुत किशोर जुगुत से तकिया चुराते थे अब उनके लड़के तकिया छीन लेंगे।

☆☆☆☆☆

लघुकथा

स्टीव को चर्च के घण्टे की आवाज़ से नफरत थी। प्रार्थना शुरू होने से कुछ वक्त पहले बजते घण्टे की आवाज़ सुनकर वह कितनी ही बार अशांत हो कह उठता कि, "पवित्र ढोंगियों को प्रार्थना का टाइम भी याद दिलाना पड़ता है।" लेकिन उसकी मजबूरी थी कि वह चर्च में ही प्रार्थना कक्ष की सफाई का काम करता था। वह स्वभाव से दिलफेंक तो नहीं था, लेकिन शाम को छिपता-छिपाता चर्च से कुछ दूर स्थित एक वेश्यालय के बाहर जाकर खड़ा हो जाता। वहां जाने के लिए उसने एक विशेष वक्त चुना था जब लगभग सारी लड़कियां बाहर बॉलकनी में खड़ी मिलती थीं। दूसरी मंजिल पर खड़ी रहती एक सुंदर लड़की उसे बहुत पसंद थी।

एक दिन नीचे खड़े दरबान ने पूछने पर बताया था कि उस लड़की के लिए उसे 55 डॉलर देने होंगे। स्टीव की जेब में कुल जमा दस-पन्द्रह डॉलर से ज़्यादा रहते ही नहीं थे। उसके बाद उसने कभी किसी से कुछ नहीं पूछा, सिर्फ वहां जाता और बाहर खड़ा होकर जब तक वह लड़की बॉलकनी में रहती, उसे देखता रहता।

एक दिन चर्च में सफाई करते हुए उसे एक बटुआ मिला, उसने खोल कर देखा, उसमें लगभग 400 डॉलर रखे हुए थे। वह खुशी से नाच उठा, यीशू की मूर्ति को नमन कर वह भागता हुआ वेश्यालय पहुंच गया।

वहां कीमत चुकाकर वह उस लड़की के कमरे में गया। जैसे ही उस लड़की ने कमरे का दरवाज़ा बन्द किया, वह उस लड़की से लिपट गया। लड़की दिलकश अंदाज़ में मुस्कुराते हुए शहद जैसी आवाज़ में बोली, "बहुत बेसब्र हो। सालों से लिखी जा रही किताब को एक ही बार में पढ़ना चाहते हो।"

स्टीव उसके चेहरे पर नजर टिकाते हुए बोला, "हाँ! महीनों से किताब को सिर्फ देख रहा हूँ।"

"अच्छा!", वह हैरत से बोली, "हाँ! बहुत बार तुम्हें बाहर खड़े देखा है। क्या नाम है तुम्हारा?"

"स्टीव और तुम्हारा?"

"मैरी"

जाना-पहचाना नाम सुनते ही स्टीव के जेहन में चर्च के घण्टे बजने लगे। इतने तेज़ कि उसका सिर फटने लगा। वह कसमसाकर उस लड़की से अलग हुआ और सिर पकड़ कर पलँग पर बैठ गया।

लड़की ने सहज मुस्कुराहट के साथ पूछा, "क्या हुआ?"

वहीँ बैठे-बैठे स्टीव ने अपनी जेब में हाथ डाला और बचे हुए सारे रुपए निकाल कर उस लड़की के हाथ में थमा दिए। वह लड़की चौंकी और लगभग डरे हुए स्वर में बोली, "इतने रुपये! इनके बदले में मुझे क्या करना होगा?"

स्टीव ने धीमे लेकिन दृढ़ स्वर में उत्तर दिया, "बदले में अपना नाम बदल देना।"

कहकर स्टीव उठा और दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल गया। अब उसे घण्टों की आवाज़ से नफरत नहीं रही थी।

-0-

"राष्ट्र प्रथम" ही बना जिनका युग-धर्म"

युवा-मन को आंदोलित करते आज भी उनके लिखे गीत

हमारा देश भारत वर्तमान में स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभाबैठक (11-13 मार्च 2022)में सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले के उदगार-" भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता थी कियह केवल राजनीतिक नहीं,अपितु राष्ट्रजीवन के सभी आयामों तथा समाज के सभी वर्गों के सहभाग से हुआ सामाजिक-सांस्कृतिकआंदोलन था। इस स्वतंत्रता आंदोलन को राष्ट्र के मूल अधिषठान यानि राष्ट्रीय "स्व" को उजागर करने के निरंतर प्रयास के रूप मेंदेखना प्रासंगिक होगा "

गत दिनांक 17मार्च 2022 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रामपुर बुशहर (हिमाचल प्रदेश) द्वारा "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक

सामान्य सी क़द-काठी व घुंघराले बालों वाले चेहरे पर मोटा सा चश्मा लगाए मेरे गुरु जी की आवाज़ बहुत ही प्रखर व बुलंद थीविशेषकर तब जब कभी वह अपनी लिखी देश-भक्ति की किसी भावपूर्ण कविता का वाचन कर रहे होते थे ..तब उनकी आँखो में एकतेज कौंधता था साथ ही उनकी मुट्ठी भी आवेश में बंध जाती थी।

उनकी लेखनी से देश व मातृभूमि के महिमा गान में समर्पित व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर अनेकों गीत निसृत हुए जो आज भी बहुतप्रासंगिक हैं व जन-जन में विशेषकर युवा-मन को भरपूर जोश व प्रेरणा से भर देते हैं।उनके अनेकों गीत स्वयंसेवकों की जिह्वा पर चढ़करअमर हुए हैं। यथा : "ओ भगीरथ चरण चिन्हों पर उमड़ते आ रहे हम; बढ़ते जाना-

सम्पादकीय प्रशिक्षु (1985-87)कार्य किया,इस कार्यालय की बिल्डिंग के पास ही स्थितदीनदयाल अनुसंधान केंद्र से अलग अलग भाषाओं में प्रकाशित होने वाली विचारशील त्रेमसिक"मंथन "पत्रिका "के हिन्दी -अंग्रेज़ीअनुवाद-कार्य से भी उन्होंने कुछ समय के लिए जोड़ा ।अपने ऑफ़िस टाइम के बाद की अवधि में इसी केंद्र में अक्सर आ०चन्द्रकान्त जीसे वैचारिक विमर्श/दिशा मिलती थी।

उनकी छः यशस्वी पुत्रियां-सुश्री रेणुका मित्तल,इन्दु द्विवेदी,डा०बिंदु डे,मुक्ता,संध्या शर्मा व वंदना; अपने सौभाग्यशाली पिता केसमग्र व्यक्तित्व व कृतित्व को एकमत से सराहते हुए खुद को आज गौरवान्वित महसूस करती हैं । वर्तमान सरकार की मेक इनइंडिया परियोजना की निदेशक रह चुकीं डा०बिंदु डे का मानना है कि" पिताजी द्वारा सृजित साहित्य विशेषकर गीत काव्य रचनाओं मेंसंवेदना उनके अनुभव देश प्रेम संग्रहित है जो आज की पीढ़ी के लिए निश्चित रूप से प्रेरणादायक है।"

ललित महाजन सरस्वती विद्या मंदिर दिल्ली

बढ़ते जाना; विश्व मंगल साधना के हम हैं मौन पुजारी; राष्ट्र में नवतेज जागा; पुरानी नींव नया निर्माण.. आदि उनके प्रसिद्ध गीत हैं। ऐसे ही- "अरुणोदय हो चुका वीर अब कर्मक्षेत्र में जुट जाएं; ले चले हम राष्ट्र नौका को भंवर से पार कर; युग-युग से स्वप्न संजोये जो हमको पूरे कर दिखलाना; नया युग करना है निर्माण; हिन्दू जगेतो विश्व जगेगा; लोकमन संस्कार करना यह परमगति साधना है; मानवता के लिए उषा की किरण उगाने वाले हम; पथ का अंतिम लक्ष्यनहीं है सिंहासन चढ़ने जाना; देश का संदेश;पर्व हमारे ;हर्षोल्लास जैसे उत्सव धर्मी प्रमुख …आदि गीतों की भी एक सुंदर शृंखला है।

वर्ष 1976-81 तक की अवधि मेरी युवा-स्वप्नों के मुखर होने का काल था जब दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज महाविद्यालय मेंकला -स्नातक "हिन्दी आनर्स"(विज्ञ पाठ्यक्रम) में प्रवेश लिया था ।महऋषि दयानन्द व महात्मा हंसराज जी के आदर्शों के अनुरूपशिक्षा,आवधिक यज्ञ-कर्म,उपनिषदों सम्बन्धी शिक्षा-परीक्षा के अनुक्रम में ही आदरणीय स्व प्रशांत कुमार वेदालंकार व स्व चन्द्रकान्तभारद्वाज जी से प्रथमतः परिचय आशीर्वाद मिला था,संभवतः संघ से प्राथमिक परिचय भी।

मैंने दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन समूह में बतौर

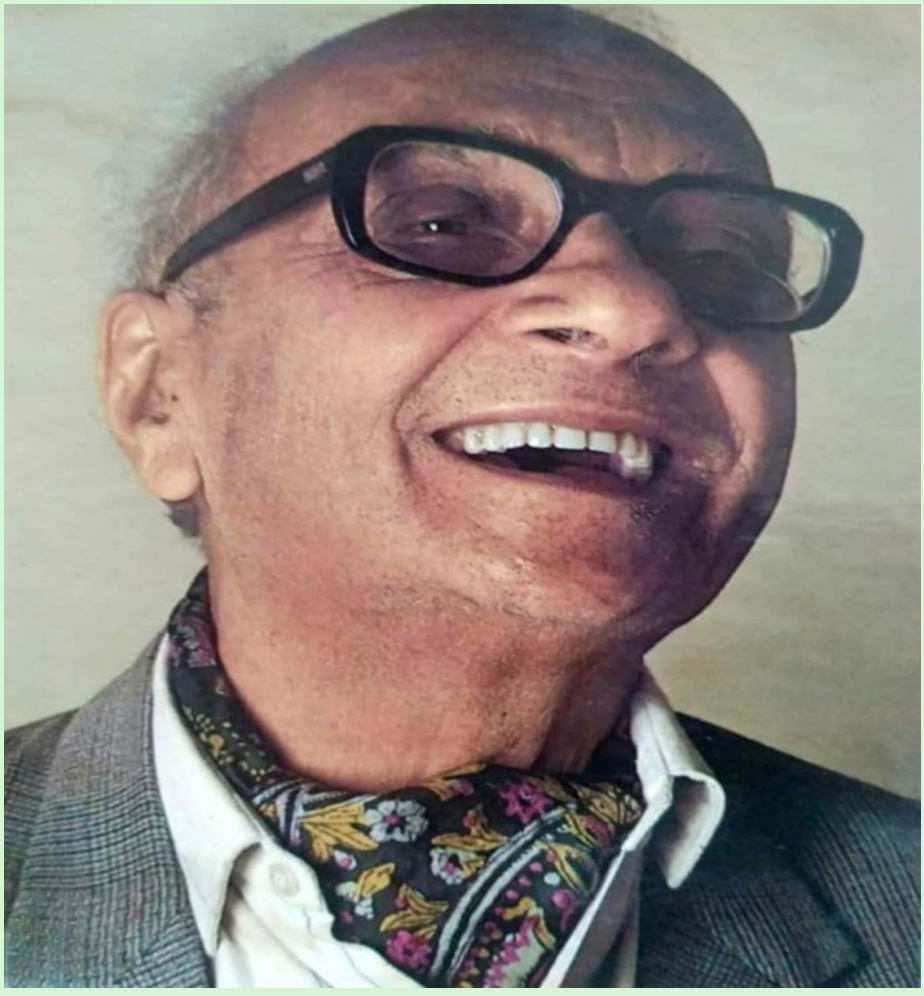

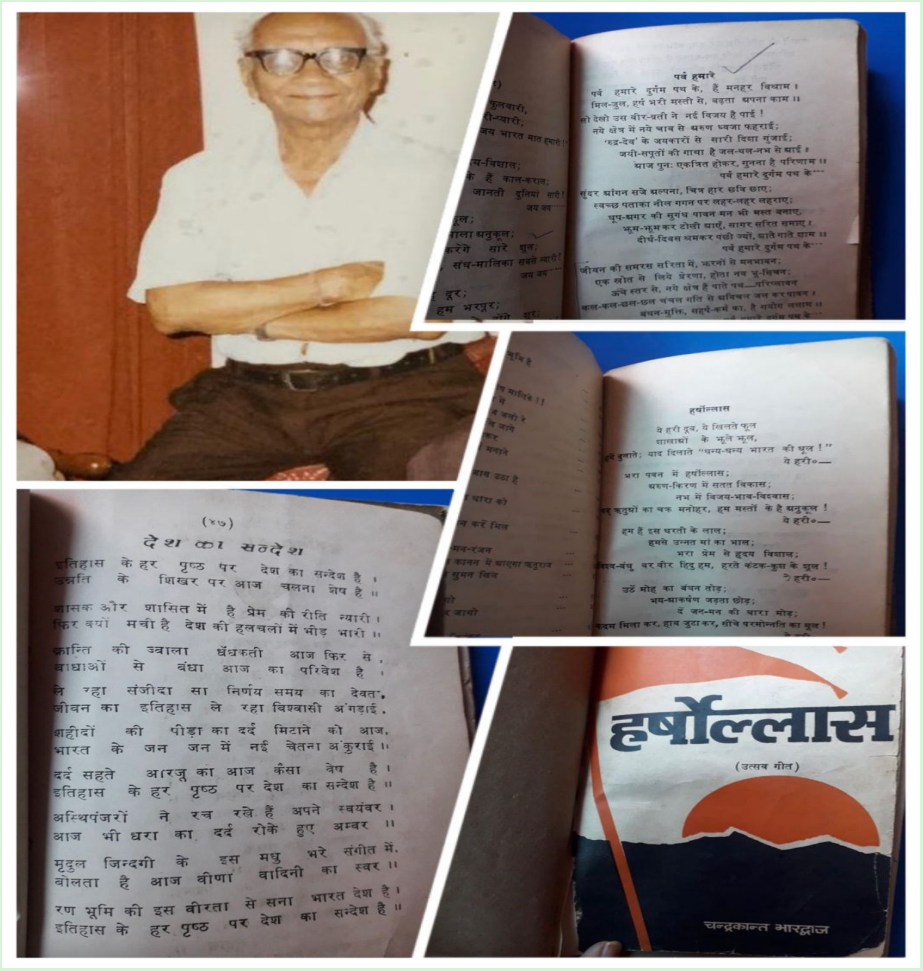

में गत लगभग 30 वर्षों से अध्यापिका संध्या शर्मा अपनेपिताश्री द्वारा रचित गीतों कोछात्र-गणों से मुख से सुनकर अक्सर भाव-विभोर होकर कह उठती हैं कि"हमने बचपन से उनकी कलम-शक्ति में पूरे राष्ट्र को प्रेरितकरना और वीरों के लिए सुंदर भाव व्यक्त करना देखा है ।उनकी एक प्रसिद्ध कविता ' केसरी बाना सजाएँ 'के सुंदर शब्द मैं बतानाचाहूंगी :-...

केसरी बाना सजाएं वीर का

श्रृंगार कर ले चले हम

राष्ट्र नौका को भंवर से पार कर...

हमारे पिताजी सुरक्षा थे, सर पर हाथ थे , हमारे परिवार का आधार थे और हमें उन पर बहुत गर्व है।"

अतः कुल मिलाकर मेरे युवा-मन पर अमिट छाप छोड़ने वालों में मेरे हिन्दी के प्रोफ़ेसर आ० स्व०चन्द्रकान्त भारद्वाज जी प्रमुख हैं ।"ध्रुव" उपनाम से भी देश-प्रेम,मातृभूमि - जन्मभूमि के प्रति सच्ची निष्ठा व समर्पण रखने वाले उनके कवि-हृदय ने कई गीत लिखे जोसार्वकालिक व सार्वजनीन हैं । संघ की शाखाओं/कार्यक्रमों में गाए..गुनगुनाए जाने वाले इन गीतों में बाल,तरुण व वृद्ध सभी को प्रेरणामिलती है।

आज देश की स्वाधीनता के इस अमृत महोत्सव की पावन बेला में आ० चन्द्रकान्त भारद्वाज जी जैसे कलम के योद्धा द्वारा राष्ट्रीय "स्व" को उजागर करने के निरंतर प्रयासों की सुदृढ़ कड़ी के रूप में देखना अधिक समीचीन होगा ।त्याग व समर्पण के प्रतिरूप माँ भारती केइस सपूत को बारम्बार प्रणाम है,जिन्होंने अपने साहित्य विशेषकर गीतों के माध्यम से समाज को एक राष्ट्र के रूप में सूत्रबद्ध रखने केसाथ साथ सतत सामाजिक समरसता के विभिन्न सरोकारों को सम्पूर्ण मानव-जाति ;नई उभरती युवा-पीढ़ी में सकारात्मकता का मार्गप्रशस्त किया।

चन्द्रकान्त पाराशर

(पूर्व अपर महाप्रबंधक(का /प्र०-राजभाषा) सेवानिवृत्त , नाथपा झाकडी हाइड्रो पावर स्टेशन ,Sjvn Ltd झाकडी ज़िला:शिमला

अस्थिर और बेहद खाली
बहुत उदास और प्राचीन भँवर सी
नींद थी आँखों से बहुत दूर मेरी
अलस-उनींदा बैठा रहा
खिड़की के पास मैं
मेज़ पर था कुल्हड़ चाय की
नज़र पड़ी और देखा क्या
उँगलियों में फँसी सिगार
और था
धुँओ से धुँधला चेहरा उसका
लगा इक क्षण जल रहा था
सूरज जैसे
ओजस्वी थी, तेजस्वी थी,
जैसे अनन्त युवा सूर्य से हो निर्मित
नव-अरुण की ऊष्मा से
तंद्रा भंग हुई जब मेरी
हिलता-डुलता वसन्त देखा
ओजस को नकार कर
उपहास मेरा करते।

विकास तिवारी

(स. अ. प्राथमिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश)

हीरा

हीरा कृषि विज्ञान से ग्रेजुएट था, उसके साथ के कई लड़के नौकरी करने के लिए गाँवछोड़कर शहर चले गए। परन्तु हीरा गाँवछोड़कर नही गया, क्योंकि उसे अपने गाँवसे बहुत लगाव था। वह गाँवमे ही रहकर खेती करना तथा खेती से ही जीविकोपार्जन करना चाहता था।

हीरा को खेती करना बहुत अच्छा लगता था, उसे लहलहाते खेत,झूमती गेहूं की बालियाँ, धान रोपना इन सब से सुकून मिलता था। खेत जाते वक्त हीरा अपने साथ नमक की पुड़िया जरूर लें जाता था और लाल- लाल टमाटर तोड़कर नमक से खाता था....तो कभी छीमी तोड़कर चबाता। गुब्बारे की तरह फूले बैगनी बैगन को देख कर आनंदित होता था। हीरा ने अपने खेत मे लगभग सभी कुछ बो रखा था।आलू,गाजर,मूली,फूल गोभी इत्यादि तो दूसरी तरफ हरी सब्जियाँ। उसे ताजी हरी सब्जियाँ बहुत भाती थी।

हीरा बहुत ही विनम्र स्वभाव का था, गाँवके लोग हीरा को बहुत मानते थे तथा हीरा से कृषि से संबंधित जानकारियां भी लेते रहते थे।

फसल बहुत अच्छी होने की वजह से गाँववाले बहुत प्रसन्न थे। इसलिए इस बार समय से जुताई बुआई करके निश्चिन्त हो गए और समय-समय पर खाद पानी देते रहते थे। खेत लहलहाने लगे गाँववालो की खुशी का ठिकाना ही नही रहा। लेकिन इन्द्र देवता को

गाँववालो की खुशी रास नही आई, वे इतना जमकर गरजे बरसे की खेत खलिहान सब डूब गए। फसल बर्बाद हो जाने से गाँवमे मातम छा गया। ऐसे में कुछ लोग अपनी खेत बाड़ी सब बेचकर शहर की ओर पलायन करने लगे तो कुछ लोग अपने खेत गिरवी रखने लगे।

ऐसे में हीरा आगे आया और गाँववालो को समझाने लगा। - 'गाँव छोड़कर शहर चले जाना समस्या का समाधान नही है।'

'समाधान है - समस्याओं का सामना करना और उनका हल ढूंढ़ना। इसके लिए हमे एकजुट होकर समझदारी का परिचय देना होगा '

'क्या शहर मे बाढ़ नही आती?'...आती है,शहर मे भी बाढ़ आती है।बड़ी-बड़ी इमारतें पुल आदि सब ढह जाते हैं। लेकिन वे लोग शहर छोड़कर कहीं नही जाते, समस्याओं का सामना करते हुए फिर से नई शुरुआत करते हैं।'

शहर हो या गाँवसभी लोग अन्न पर ही निर्भर है और यह अन्न खेत मे पैदा होता है।सब लोग शहर मे रहने लगेंगे तो खेती कौन करेगा?

अन्न की पैदावार कैसे होगी?

क्या बिना अन्न के, बिना खेती के कोई भी देश तरक्की कर सकता है?

'नही.... नही कर सकता '

'इन्द्र देवता गरज बरस सकते हैं पर हमे बिखेर नही सकते। हमे हिम्मत से काम लेना होगा। हम न खेत बेचेंगे और न ही गिरवी रखेंगे। हम

परिस्थितियों के साथ समझौता कर सकते है, पर हार नही मानेंगे।'

'हीरा बेटवा अगर हम न खेत बेचेंगे और न गिरवी रखेंगे तो हम का खाएंगे ? - बुजुर्ग काका बोले।'

'हां हां हीरा भैया बताओ हम का खाएंगे और कैसे अपना परिवार चलाएंगे?- गाँवके लड़के बोले।'

'मैं आप लोगो की परेशानी समझ सकता हूं। इस बार अधिक बारिश होने की वजह से हम सब की फसल बर्बाद हो गई। पर हर बार ऐसा नही होगा.... भगवान इतना बेरहम नही है। हम सरकार से लोन ले सकते हैं और यदि कोई विपदा आई तो इस समस्या को सरकार भी समझती है, हमारी कई तरह से मदद करती है।- हीरा ने समझाते हुए कहा।'

'पर बेटवा जब आमदनी ही न होए त हम पचे लोन कैसे भरब?- गाँवके बुजुर्ग बोले।'

काका इसके लिए हमें समझदारी से चलना होगा। मेरे जैसे कई नौजवान यहां पढ़े लिखे हैं। हम पैसे बचाने तथा पैसे कमाने के लिए गाँवमे ही कई योजनाएं शुरू कर सकते हैं, लघु उद्योग खोल सकते हैं। अब तो हमारे गाँव में लड़कियां भी सब पढ़ लिख रही है कई हुनर सीख रही हैं,उनका भी सहयोग मिल जाएगा।

'ठीक है हीरा तुम जो कहोगे हम वही करेंगे अब हम गाँव छोड़कर नही जाएंगे, मन लगा कर खेती करेंगे - सब गाँववाले एक साथ बोले।'

गाँववालो ने लोन लेकर खेती पुनः प्रारंभ कर दिया।

गाँवकी स्थिति धीरे-धीरे सुधरने लगी, सरकार तथा गाँववालो के सहयोग से हीरा ने कई लघु उद्योग खोल दिए जैसे - सिलाई कढ़ाई बुनाई उद्योग,अचार,मसाले, पापड़ बनाना, गोबर से दीए बनाना इत्यादि.....। गाँवकी औरते आदमी सब काम पर लग गए सबको रोजगार मिल गया। हीरा तथा गाँवका नाम दूर-दूर तक फैल गया और जो लोग गाँव छोड़कर चले गए थे.....वे भी गाँववापस आने लगे।

सभी लोग खुली हवा मे सांस ले रहे थे तथा खेती के साथ-साथ लघु उद्योग को भी आगे बढ़ा रहे थे। गाँवकी ख्याति अब विदेशो तक पहुंच गई थी।

प्रियंका त्रिपाठी 'पांडेय'

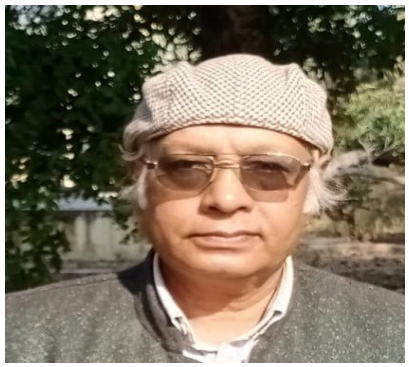

केशव शरण

जवाब

मुझे जताया जा रहा है
मैं कितने में रहूँ
कोई हर्ज नहीं है
मैं कम से कम में रह लूँगा
लेकिन इसके लिए
मुझे सताया जा रहा है
मगर कोई फ़र्क़ नहीं है
मैं अधिक से अधिक सह लूँगा

मैं कविताओं में उड़ूँगा
जो उड़ती हैं हदों के पार
मैं फूलों से जुड़ूँगा
जो ताक़त देते हैं अपार

ख़याल

ख़याल
अँधेरे में आते हैं
और अँधेरा लेकर
या फिर सवेरे से पहले का
सवेरा लेकर
और हमें देकर
चले जाते हैं

वे बार-बार आते हैं
और हर बार
यही लाते हैं
जब तक कि हम
तम में खप नहीं जाते हैं
या जीवन को
चमका नहीं पाते हैं

लड्डू गोपाल

बिट्टो रानी स्कूल से वापस आने पर दादी के कमरे के बाहर से गुजरते हुए दादी से बिना मिले जैसे ही एक कदम बढ़ाया ....दादी ने देख लिया.... मारे गए।

"बिट्टो इधर को आना जरा।"

"दादू बैग रख कर आती हूँ।"

एक तो यह लड़की हर समय हवा के घोड़े पर सवार रहती है.

पहले मेरी बात सुन फिर बैग रख लेना।

दादी आप मुझसे गुस्सा हो क्या ?

तुझे क्या लगता है ? मुझे गुस्सा करने का भी हक नहीं है।

प्यारी सी दादू ये सब छोड़ो मुझे बताओ क्या हुआ है ये बैग पैक कर के कहाँ जा रही हो।

बिट्टो रानी अब मैं अपने लड्डू गोपाल के साथ वृंदावन में ही रहूँगी यहाँ मेरी किसी को परवाह नहीं है।

दादू आपकी बिट्टो कैसे रहेगी इसे कौन दुलार करेगा आपने क्यों ना सोचा ?

अब तो तुम बड़ी हो गई हो तुम्हें मेरी जरूरत ही कहाँ रह गई है ?

अब ऐसी भी कोई बात नहीं है दादू आप तो खामखां नाराज हो रही है।

दादू याद आया कल जन्माष्टमी है आपने मुझे लड्डू गोपाल की पोशाक लाने को को कहा था। ये देखो दादू ..... बिट्टो के हाथ में सुंदर पोशाक देख दादी का चेहरा खिल उठा।

"अब तो गुस्सा थूक भी दो मेरी दादू "

दादू वृंदावन जाना कैंसिल करो .....चलो अब जन्माष्टमी की तैयारी करते हैं ..।

अर्विना गहलोत

ब्रजेश श्रीवास्तव

नाम है लक्ष्मण

- तुम लक्ष्मण हो ?
- नही साहब, मैं लक्ष्मण नहीं हूं।
- पर इस लिस्ट में तो तुम्हारा नाम लक्ष्मण ही लिखा है।
- हां साहब, लिस्ट में सही लिखा है।
- लेकिन तुम तो कह रहे हो कि मैं लक्ष्मण नहीं हूं।
- हां साहब, में लक्ष्मण नहीं हूं।
- ये क्या ड्रामा है ?
- ड्रामा नही है साहब, बस थोड़ा समझने वाली बात है। अगर आप पूछेंगे कि क्या तुम्हारा नाम लक्ष्मण है ? तो मैं कहूंगा कि हां मेरा नाम लक्ष्मण ही है, लेकिन अगर आप सीधे पूछेंगे कि क्या तुम लक्ष्मण हो ? तो मेरा उत्तर यही रहेगा कि मैं लक्ष्मण नहीं हूं। मेरा नाम लक्ष्मण होने से मैं लक्ष्मण थोड़े ही हो जाऊंगा। मैं क्या, कोई भी व्यक्ति किसी देवता, महात्मा या किसी महान व्यक्ति का सिर्फ नाम होने से वो वही हो जाएगा क्या ? उनके जैसी महानता, उनके जैसा गुण वो कहां से लाएगा? और मान लीजिए वो गुण आ भी गए तो भी वो वही तो नही हो सकता। मेरे माता पिता ने मेरा नाम लक्ष्मण रख दिया इसलिए मेरा नाम लक्ष्मण है पर मैं लक्ष्मण हो सकता हूं क्या? इसलिए साहब, अगर आप ये पूछते हैं कि क्या मेरा नाम लक्ष्मण है ? तो मेरा जवाब 'हां' होगा परंतु सीधे पूछने पर मैं यही कहूंगा कि मैं लक्ष्मण नहीं हूं।

साहब, मैं ठहरा गांव का एक कम पढ़ा लिखा आदमी, जो मेरे दिमाग में आया बोल गया। अब आप जो समझें। चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही पर साहब भी निरुत्तर हो गए थे।

(ये एक काल्पनिक वार्तालाप है किसी गांव में सर्वे पर गए एक अधिकारी और गांव के ही एक निवासी के मध्य)

क्या हुआ है ?

क्या हुआ है ?
छोड़ अपना गाँव 'जिउता'
शहर में ही रह रहा है |

अभी मन में, कुआँ-जोहड़,
खेत हैं, खलियान भी हैं,
वह फटी लुंगी पुरानी,
चीलरी बनियान भी हैं,
क्या हुआ है ?
पोखरों की गंदगी को,
बहुत कसकर गह रहा है |

सेमरी, मँगरी, जनकिया,
गाँव में ही मर रही हैं,
झाड़-झूड़न और बरतन,
काम सारे कर रही हैं,
क्या हुआ है ?
समय है बलवान, लेकिन
कष्ट सारे सह रहा है |

नीम का वह पेड़ हरियल
और बरगद की हवा नम,
है नहीं शहरी प्रदूषण
साँस में है आज भी दम,
क्या हुआ है ?
एक वैज्ञानिक अपरिचित
प्रकृति-कंबल तह रहा है |

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

सिंगल मदर का चैलेंज लेते वक़्त उसे नहीं मालूम था, कि वह जिस परिवार के दम पर यह सब कर रही है साल बीतते-बीतते उसी परिवार में उसका स्थान ख़ास न रहकर आम हो जायेगा।

जब दिवाली में सब तरफ़ रौनक़ों की फुलझड़ियाँ छूटीं तब उसने भी अपनी बेटी का हाथ थामकर कुछ सितारे चुने थे। किंतु न जाने क्यों उसे अपने हाथ में कुछ अनदिखे छालों का एहसास हुआ था।आज जबकि भाईदूज़ का दिन था तब भी सब अपने में वयस्त थे।भाई अपने बच्चों के साथ वक्त बिता रहे थे और पापा बुआ के इंतज़ार में बाहर ही खड़े थे।वह इसी घर की होकर भी इस परिवार की नहीं रह गई थी।सुबह से ही सब दीदी,के आने की राह देख रहे थे।भाई ने तो उसे ही बोल दिया कि- "पता तो कर छोटी!दीदी,को आने में और कितना वक्त है।उनके आने के बाद ही चौक पर जाऊँगा तभी रौनक़ सजेगी।तब तक तुम जाकर बच्चों की दूज करवा दो।"

तभी भाभी ने भी उसे आवाज़ दी-"छोटी जिजी, ज़रा आप खीर के मेवे ही काट दो, दीदी आ ही रहीं होंगी।"

बात और काम सब छोटे-छोटे थे किंतु उनमें स्नेह की जगह आदेश ने अपनी पैठ बना ली थी जो अनजाने में ही उसके सम्मान को आहत कर रहे थे।मेवे काटते हुये वह बीते महीनों के कठिन वक्त में जा पहुँची जहां उसके अलग रहने के प्रस्ताव का घर के सभी लोगों ने यह कहते हुये स्वागत किया था कि-"प्रताड़ना सहने से कहीं ज़्यादा बेहतर है अकेले रहना।" किंतु यह अकेलापन उसे इतना अकेला कर देगा इसका एहसास उसे अब ही हुआ।वह अपने रूखे से मन के साथ क़ाजू काट रही थी कि दीदी,की कार आ गई।सभी ने गेट पर जाकर दीदी और जीजाजी का स्वागत किया। वह भी खुश होकर आगे बढ़ी ही थी कि भाई ने दीदी को गले से लगा लिया यह देख वह दो क़दम अलग हो गई तभी भाई ने दूसरे हाथ से उसका हाथ थामा और बोला-"चल छोटी दूज़ करते हैं। तुम दोनों से ही तो मेरे आँगन की चौक सजती है।"

स्नेहसिक्त स्पर्श और शब्द उसके मन के ताल में जमती काई को हिला गया। उसने टीका करते हुये एक और फ़ैसला लिया कि सिंगल मदर की ज़िम्मेदारी वह मायके से एक हाथ की दूरी रखकर ही पूरी करेगी।

ज्योत्सना सिंह

(कहानी)

'सौ का नोट'

दीपक कुमार

अनायास ही जेब में हाथ गया तो लगा कोई मुड़ा- तुड़ा कागज का टुकड़ा है। बाहर निकाल कर उसे धीरे-धीरे सीधा किया तो पता चला सौ का नोट था। शायद लंबे समय से जेब में पड़ा था। आजतक तो ऐसा हुआ नहीं कि मेरी जेब किसी नोट को लंबे समय तक संभाल कर रख सके तो फिर यह कैसे टिक गया वहां। बहुत देर तक माथे पर बल देता रहा तब जाकर याद आया। सात दिन पहले जब वाकिंग के लिए निकल रहा था तो सौ का एक नोट लोवर की साइड जेब में रख लिया था। वैसे तो मैं वाक के समय जेब में कुछ भी नहीं रखता, मोबाइल फोन भी नहीं, जेब में किसी चीज का होना दिमाग को अस्थिर करता है और अस्थिरता से घबराहट होती है मुझे।

याद आया पत्नी को जलेबी चाहिए थी, इसलिए उस दिन सौ का नोट लेकर निकला था। अभी जूते बांध ही रहा था कि वह बोली- 'आते वक्त जलेबी लेते आइएगा।'

गुस्सा तो बहुत आया पर उसे अंदर ही जब्त कर गया। ये भी क्या बात हुई कि जब भी बाहर निकलो कुछ न कुछ फरमाइश, ये करते आइएगा, वो लेते आइएगा। क्या मैं इतना लाचार हूं कि बिना किसी जिम्मेदारी के स्वतंत्र रूप से टहल भी नहीं सकता। खैर सौ का नोट लेकर चला, चला जरूर पर जलेबी लाना भूल गया। आशंका तो थी कि पत्नी चिल्लाएगी और हर बार की तरह अपने भाग्य को कोसेगी कि कैसे मर्द के पाले पड़ गई

लेकिन उस दिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

अगले दिन फिर निकला और टहल कर वापस आ गया। उसके अगले दिन भी वही हुआ और आज सातवां दिन है। सौ का नोट जेब में जस का तस वहीं बैठा हुआ है। सोचता हूं, तो क्या इन सात दिनों में मैंने कुछ भी नहीं खरीदा, एक चाय तक नहीं पी, सिगरेट का एक कश तक नहीं लगाया और उस बनारसी पान वाले की दुकान पर गये एक सप्ताह हो गया।

फिर सोचता हूं बाबूजी के बारे में और अचानक से कोई बर्फीली आंधी मेरे भीतर से गुजर जाती है। मैं सिहर जाता हूं और एक अनजान-सा भय मुझे घेरने लगता है। मेरे भीतर से एक आवाज उठती है, बाबूजी मैं अकेला हो गया हूं, कमजोर हो गया हूं, नाकाम हो गया हूं और अनाथ भी।

तभी सिहरन थोड़ी कम होती है और लगता है कोई कह रहा है, धत पगले अभी से घबरा गया, तू आज भी वही है, वैसे ही जिंदगी का आनंद लेता चल जैसे पहले लेता था।

तो पहले क्या थे हम? ओल्ड मंक का एक पेग लेते ही बाबूजी आनंद और उल्लास से भर जाते थे और शुरू करते थे अपने आर्मी डेज

की कहानी, तुम्हारे बाबूजी युद्धबंदी होते-होते बचे। मेजर सन्याल को बचाने गया तो पांच पठानों ने मुझे धर लिया। मेजर साहब तो निकल गये वहां से, पकड़े गये हम और मद्रासी लिंगपा मगर रायफल के बट और भुजाओं की ताकत से पांचों को ऐसे रगड़ा कि आज भी कबर में पानी मांगते होंगे।

उधर पत्नी भड़कती है- वाह रे जमाना, बाप-बेटा साथ में पीने लगे तो फिर बचा ही क्या? खुद तो बार में जाते ही हैं और आते समय बाबूजी के लिए बोतल में प्रसाद लेते आते हैं।

उधर पत्नी भड़कती है- वाह रे जमाना, बाप-बेटा साथ में पीने लगे तो फिर बचा ही क्या? खुद तो बार में जाते ही हैं और आते समय बाबूजी के लिए बोतल में प्रसाद लेते आते हैं।

पत्नी के इस बयान पर पिता-पुत्र हंसते थे, इतना हंसते थे कि बाबूजी की खांसी उपट जाती थी।

पत्नी के इस बयान पर पिता-पुत्र हंसते थे, इतना हंसते थे कि बाबूजी की खांसी उपट जाती थी।

एक दिन पत्नी ने कहा," चाय, सिगरेट, दारू, फेसबुक, गुगल और आपका साहित्य, इसके अलावा भी कोई दुनिया है। कभी सोचा है, इस राजशाही का परिणाम क्या होगा? आज बाबूजी की पेंशन है तो काम चल रहा है, वरना आपकी तनख्वाह तो आपकी रंगदारी में ही चली जाती है।"

इसपर बाबूजी भड़के थे," मेरा बेटा शेर है और शेर की तरह ही जिएगा। इसको किसी हद में मत बांधो बहू।"

मेरे भीतर चल रही बर्फीली आंधी की जगह अब गर्म हवाओं ने ले ली थी। बाबूजी को गये आज एक महीना हो गया। पिछले सात दिनों से एक सौ का नोट मेरी जेब में पड़ा हुआ है। टहलने के लिए निकलता तो रोज हूं लेकिन वह नोट वहां से हिलने का नाम नहीं ले रहा।

एक दिन पत्नी ने कहा, ' आप एक महीना से बार नहीं गये, सिगरेट पीते कभी दिखे नहीं और चाय का तो नाम भी नहीं लेते, ऐसा क्यों?'

मैंने कहा, " गंदी आदतें छूट जाएं तो ठीक है न।"

पत्नी बोलती है," आप जिंदगी से दूर हो रहे हैं। मैं ऐसा कभी नहीं चाहती थी। माना कि बाबूजी नहीं रहे, उनकी पेंशन भी नहीं रही, फिर भी मैं चाहती हूं कि आप जीना मत छोड़िए। दो रोटी कम खाएंगे लेकिन आपके जीवन का आनंद कम नहीं होने दूंगी। कल ये सौ का नोट खर्च हो जाना चाहिए, समझे।

उसकी आंखों में आंसू थे।

अन्तर्नाद

हा त्राहिमाम! हा त्राहिमाम! हा त्राहिमाम! की सुन पुकार।
क्रन्दन कर उठा हृदय कवि का, शिशुओं का सुनकर चीत्कार।।
ख़ाकीन कर दिया पतनों ने, दे दी पछाड़ उत्थानों को।।
आ रहा पसीना पथरीली, काँपती हुई चट्टानों को।
हिल उठे कलेजे शिखरों के, घाटियाँ सिकुड़ कर चीख उठीं।
मौतें हो उठीं मुखर मौनी, लाशों पर नर्तन सीख उठीं।।
आ गया ज्वार उन लहरों में, जो कभी आज तक उठीं न थीं।
गुँथ गईं युद्ध में वे कड़ियाँ, जो एक सूत में गठीं न थीं।।
लग रहा अधकटे रुण्डों की, कर उठी भैरवी खेती हो।
या मुण्डमाल के लिए पुनः, काली रण चण्डी चेती हो।।
या महाकाल की खुली आँख, तीसरी ध्वंस की बेला है।
या स्वयं कालभैरव ने आ, जग को इस ओर धकेला है।।
धरती की छाती छेद उठे, धरती पर बने बनाए बम।
दहला दी दुनिया दहशत से, हो रही बमों की बम बम बम।।
टी वी की छाती से निकले, परिदृश्य दिखाई देते हैं।
कुछ सत्य और कुछ भ्रमकारी, सन्देश सुनाई देते हैं।।
इस ओर विवश यूक्रेन खड़ा, उस ओर रूस की दमदारी।
इस ओर गुरिल्ला वारों से, उस ओर दनादन बमबारी।।
इस ओर कराहें दबी दबी, उस ओर गर्जना गर्वीली।
इस ओर आह तक पीली है, उस ओर वाह तक रौबीली।।
इस ओर चतुर्मुख धुआँ धुआँ, उस ओर फूटते फव्वारे।
इस ओर जी उठा ध्वंस राग, उस ओर नृत्य द्वारे द्वारे।।
इस ओर ध्वस्त हो गया सृजन, उस ओर अहम् है मस्तक पर।
इस ओर भुखमरी पेटों की, उस ओर दम्भ है दस्तक पर।।
इस ओर थम गई किलकारी, उस ओर लग रहे अट्टहास।
इस ओर झर चुके पारिजात, उस ओर सुर्ख होता पलास।।
क्या नई भूख के प्यासों को, पानी न मिला पाताल तलक।
जो माँस चबा पी उठे खून, छोड़ी न नरों मे खाल तलक।।
आखिर किसने जीवन्त देश, शमशान बना कर छोड़ दिया।
किसने मदमाते सिंहों के, सामने मेमना मोड़ दिया।।
किसके बल पर यह मेष पुत्र, किसकी बातों में बहक गया।
वे कहाँ गए हित के रक्षक, जिनके कारण सब दहक गया।।
सबसे ताकत वर मैं ही हूँ, बस यही सिद्ध कर पाने को।
हिंसक पशुओं में सदा युद्ध, होते हैं भूख मिटाने को।
मानव मानव को मारेगा, जग को विनाश समझायेगा?
जंगली सभ्यता पनपेगी, क्या यह विकास कहलायेगा??
जिस मानवता की जड़ें त्याग, सहयोग दया पर जमी रहीं।
वीरता विनय के साथ क्षमा, की भाव भूमि पर टिकी रहीं।।
जिस बुद्ध जीव की अण्डज क्या, पिण्डज पर पहरेदारी थी।
स्वेदज उद्भिज जड़ जंगम की, रक्षा की जिम्मेदारी थी।।

शेष पृष्ठ 29 पर

पिताजी की साईकल

मैं उस समय की बात कर रहा हूँ,जब शहर में आवागमन के लिये साईकल का प्रचलन था। दुपहिया वाहन भी इक्के दुक्के ही थे जबकि चार पहिया वाहन तो ना के बराबर थे। उस समय समाज में आपसी प्रेम भाईचारा खूब था और ईमानदारी व सादगी से लोग जीवन यापन करते थे। फिर भी मेरे पिताजी ने कभी साईकल खरीदी ही नहीं, इसलिये साईकल चलाने वाला प्रश्न ही बेईमानी हो जाता है। अब यह जिज्ञासा अवश्य ही होगी कि ऐसा क्यों ? तो उस पर नीचे विस्तार से बता दे रहा हूँ -

आज से 60 / 65 साल पहले एक घटनाक्रम में पिताजी के किसी परिचित द्वारा साईकल न वापरने पर जब पूछा, तब उन्होंने बताया कि मेरी ये दो टाँगें ही साईकिल वाले दो पहियें हैं। उसी बातचीत में उन्होंने अपने मित्र को बताया कि मैं तीन तल्ले पर रहता हूँ और मेरी तरह यहाँ अनेक लोग रहते हैं और सभी की साईकिलें नीचे एक के बाद एक सटी खड़ीं रखनी पड़ती है। और इनको रखने व निकालते वक्त आपसी हल्की खींचातानी न चाहते हुए भी हो ही जाती है इसलिये मैं भला और मेरी ये दोनों टाँगें।

उसके कुछ सालों बाद जब मैंने नौकरी पर जाना प्रारम्भ कर दिया तब इस विषय पर मेरे द्वारा पूछने पर उन्होंने मुझे समझाया कि यदि तुम दोनों टाँगों को साईकल के दो पहिये मान इनके भरोसे रहोगे तो बहुत ही ज्यादा सुखी रहोगे। फिर उन्होंने मुझे निम्न बातें समझायीं -

1) आफिस जाओ तब रोज नये रास्ते से जाना आना करो और उसके जो कारण बताये वो इस प्रकार हैं -

अ) शहर का पूरा भूगोल तुम्हें आसानी से याद भी हो जायेगा और समझ में भी आ जायेगा।

ब) आवश्यकता पड़ने पर तुम कम दूरी वाला रास्ता काम में ले पाओगे।

स) पैदल चलने पर रास्ते में पड़ने वाले हर मन्दिर का बाहर से अपने आप दर्शन हो जायेगा।

द) किस रास्ते पर किस वस्तु का बाजार बसा है , ध्यान में रहेगा।

ल) कहाँ पर कौन सी वस्तु अच्छी व उचित दाम में मिल सकती है उसका हमेशा ध्यान करते रहो ताकि किफायती में गुणवत्ता वाला सामान वापर सको।

2) पैदल चलते रहने से मोटापा पनपेगा ही

नहीं।

3) पैदल चलने वाले को डायबिटीज होती नहीं।

4) पैदल चलने से टाँगे मजबूत होती हैं।

5) पैदल चलने पर किसी के भरोसे नहीं रहोगे यानि यदि साईकल में किसी भी प्रकार की खराबी हुयी तो साईकल सवार को जरा भी पैदल चलना अखरता है।

6) पैदल चलने पर शुद्ध हवा फेफडों में जाती है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी होती है।

7) एक साथ सारा सामान लाने का झंझट नहीं रहेगा यानि रोज आफिस से लौटते समय आवश्यकता क्रमानुसार उतना ही सामान अपने थैले में डलवाओ जितना आसानी से घर तक ला पाओ। भले ही थोक भाव में सौदा कर बाकी सामान दुकानदार के पास ही रहने दो।

8) अति आवश्यकता हो तो झाका (एक टोकरी लिये मजदूर बाजारों में उपलब्ध रहते हैं) कर उससे सामान घर भिजवा दो।

9) नित्य खरीददारी होने से ताजी सब्जी, फल व फूल घर ला पाओगे।

10) भूख भी अच्छी लगेगी जिससे भोजन समय पर कर पायेंगे जो स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित माना जाता है ।

11) पैदल चलने से थकावट आना वाजिबी है जिसके फलस्वरूप रात को आरामदायक गहरी नींद आयेगी।

उपरोक्त को ही पिताश्री की आज्ञा मान आज तक मैं दो टाँगों को ही साईकल के पहियें मान आराम की जिन्दगी जी रहा हूँ हाँलाकि अब तो घर में साईकल के अलावा दुपहिया वाहन में मोटरसाइकिल व चार पहिया वाहन के तौर पर मोटरगाड़ी भी है। लेकिन मैं आज भी केवल उसमें बैठना ही जानता हूँ । चलाना सीखने की कभी ईच्छा ही नहीं हुई।

यह सर्वविदित है कि आज भी अनेकों ऐसे हैं जिनके पास साईकल नहीं है और यह सब इस बार कोरोना काल में सभी को परिलक्षित जब हुआ तब लोगों का झुण्ड सड़कों पर 2000 / 3000 कि० तक का सफर अपने दो टाँगों के भरोसे पूरा किया। इस कारण ही बरबस याद आ जाती है निम्न दो पंक्तियाँ -

न बसें काम आयीं, न रेलें काम आयीं।

बुरे वक्त में साहिब, ये दो टाँगे ही काम आयीं।।

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

पृष्ठ 27 का शेष

असहाय लगा वह नरपुंगव, नैतिकता नीति विहीन लगी।
हो उठी बली फिर दानवता, ऐसी मानवता दीन लगी।।
रो रही धरा रो रहा गगन, रो उठा नर्क का द्वार द्वार।
आँखों से झरने फूट पड़े, हा - हा खा - खा कर बार बार।।
रोको रोको यह महायुद्ध, यह महानाश का कारण है।
यह द्वन्द्व नहीं है बातों का, यह प्रलय भयंकर भीषण है।।
यदि रोक न पाए महानाश युग को कलंक लग जायेगा।
इस धवल कीर्ति की काया पर, मल भरा पंक लग जायेगा।।
गिर पड़ी कहीं बारूदों के, ढेरों पर जीती चिनगारी।
स्वाहा कर देगी सकल सृष्टि, बदला लेने की जीदारी।।
फिर कौन बचेगा महफ़िल में, क्या प्राण बिना तन डोलेंगे ?
कोयलें कहाँ पर कूकेंगीं , किस तरह पपीहे बोलेंगे ??
बेला गुलाब रजनीगन्धा, चम्पा कनेर मिट जायेंगे?
होगी दुर्गन्धित दिशा दिशा, क्या सभी पुष्प मर जायेंगे ??
पेड़ों से लिपटीं बल्लरियां ँ, कोपलें उमगती शाखों से।
हर ओर चटकती कली कली, क्या देख सकोगे आँखों से ??
ये खिले बगीचे रंग भवन, रम्भा सी इठलाती परियाँ।
मद भरी जवानी तरुणों की, मद बिन मदिराती सुन्दरियाँ।।
क्या रूप रूठ कर बैठेगा, क्या रंग मनाने आयेगा ?
क्या किलक सकेगी किलकारी, क्या जीवन राग सुनायेगा ??
वह बनक ठनक प्रेमानुराग, रुतबा रुआब किसका होगा ?
फिर कौन करेगा प्रश्न यहाँ, कैसा जवाब किसका होगा ??
क्या मौत ठहाके मार मार,जीवन को और चिढ़ायेगी ?
कटुता क्या इतनी कटु होगी, करुणा को मार भगायेगी ??
लहराती नदियों की कल कल, फिर कौन सुनेगा दुनिया में ?
झरनों से झरते सपनों को, फिर कौन बुनेगा दुनिया में ??
क्या कमी आज आ गई कहो, सोचो समझो फिर तो तय हो ।
हो किसी तरह यह युद्ध बन्द, हर ओर शान्ति का निर्णय हो।।
हाँ वही शान्ति जो जीवन में, जीवन का मूल्य बताती है।
हाँ वही शान्ति निष्प्राणों में, जो प्राणी भाव जगाती है।।
आती आँधी हो शमित दमित, हों शान्त अग्नि चारों आकर।
हों धरा गगन जल शान्त पवन, भूकम्प मेघ नदियाँ सागर।।
ज्वाला मुख गिरि हों शान्त शान्त, नग शान्त शक्तियाँ औषधियाँ।
मन के विकार हों शान्त शान्त, ब्रह्माण्ड खण्ड बहती नदियाँ।।

गिरेन्द्र सिंह भदौरिया "प्राण"

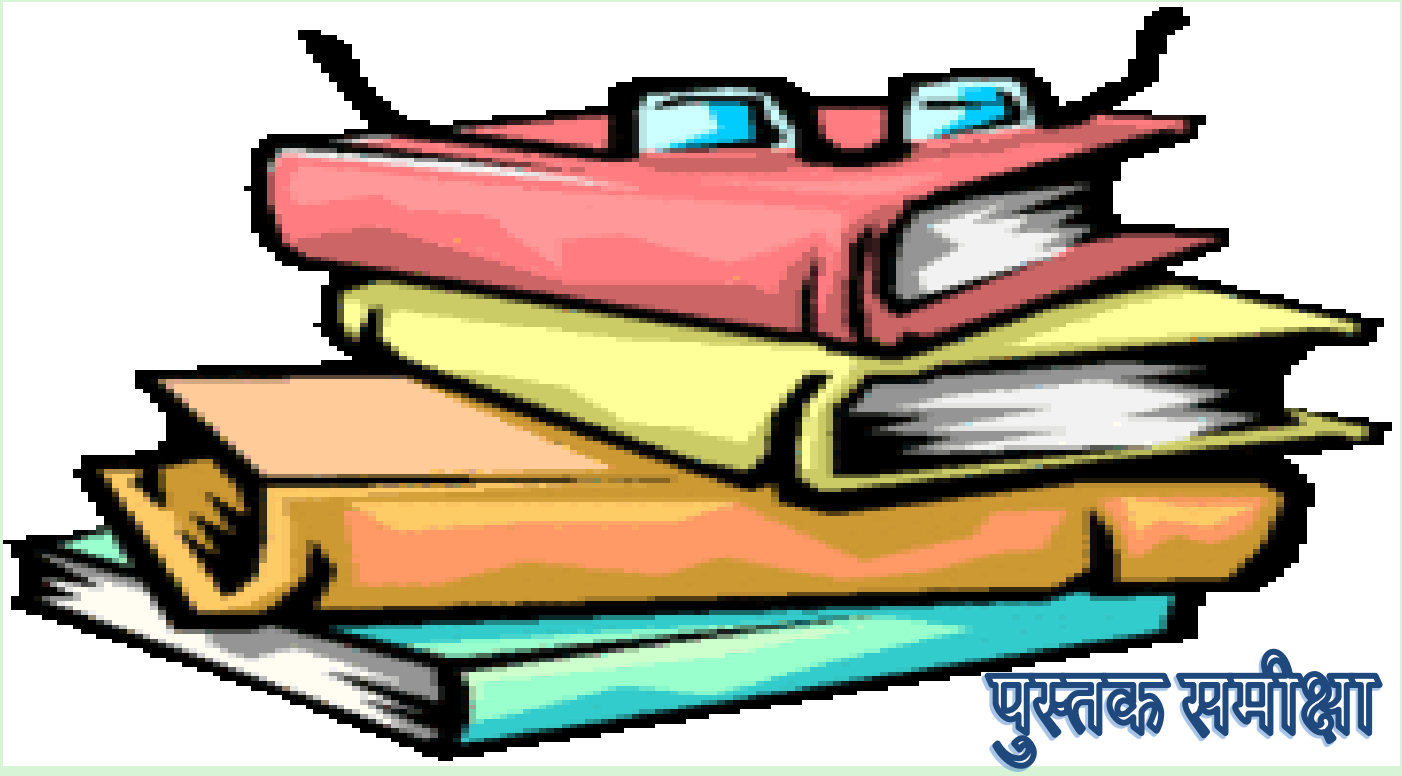

"पत्रकारिता के एक प्रयोगधर्मी युग को जानने का सूत्र" डॉ. आर. के. नीरद

यायावर शब्दशिल्पी पं बनारसीदास चतुर्वेदी
संपादक : आशुतोष चतुर्वेदी
कुल पृष्ठ : 183
मूल्य : 350/-
प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, 110002

पिछले दिनों आशुतोष चतुर्वेदी की दो किताबें आयीं, 'यायावर शब्दशिल्पी पं बनारसीदास चतुर्वेदी' और 'प्रतिबिंब'। आशुतोष चतुर्वेदी हिंदी पत्रकारिता के गंभीर, प्रयोगधर्मी और अनुभवी हस्ताक्षर हैं। पत्रकारिता में प्राय: 30 वर्षों की उनकी विशेषज्ञता है। वे देश की हिंदी पत्रकारिता में अनुभवी और विशेषज्ञ पत्रकारों में गिने जाते हैं। विदेशों में भी काम करने का गहरा अनुभव रखते हैं। प्रसिद्ध समाचार पत्रिका 'माया', 'इंडिया टुडे', 'संडे ऑब्जर्वर', 'जागरण', 'बी. बी. सी. लंदन' और 'अमर उजाला' से जुड़े रहने के लंबे अनुभव के बाद सम्प्रति 'प्रभात खबर' के प्रधान संपादक हैं। 'प्रतिबिंब' उनके उन चुनिंदा आलेखों का संकलन है, जो 'प्रभात खबर' के संपादकीय पन्ने पर छपे हैं। दूसरी पुस्तक पं बनारसीदास चतुर्वेदी के जीवन, व्यक्तित्व और उनके कृतित्व के विभिन्न आयामों को रेखांकित करने वाले आलेखों और खास कर उनसे जुड़े संस्मरणों पर केंद्रित है। पुस्तक में पं बनारसीदास चतुर्वेदी पर 21 लेखकों के आलेख, तत्कालीन उपराष्ट्रपति शंकर दायल शर्मा का पंडित जी पर दिया गया व्याख्यान, पंडित जी के दो आलेख, प्रेमचंद के साथ के उनके दो दिन रहने का संस्मरण, उनके द्वारा लिखा एक पत्र तथा राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा पंडित जी को लिखा एक पत्र संकलित है.

स्थूल रूप में इस पुस्तक की दो बड़ी विशेषताएं है। एक यह कि इसका संपादन उनके पौत्र आशुतोष चतुर्वेदी ने किया है। श्री चतुर्वेदी की पत्रकारिता के प्रथम प्रेरक पुरुष स्वाभाविक रूप से पंडित जी ही थे। दूसरी बात कि इसमें जिन 21 लेखकों के आलेख हैं, वे लेखन के क्षेत्र में स्वनामधन्य तो हैं ही, पंडित जी से निजी तौर पर उनकी गहरी निकटता रही या उनसे बहुत गहरे तक प्रभावित रहे। लिहाजा, यह पुस्तक पंडित जी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व पर गहनता और समग्रता से इतनी सामग्री समेटे हुए है कि नयी पीढ़ी का कोई व्यक्ति इस एक पुस्तक को पढ़ कर उनके विषय में पर्याप्त ज्ञान पा सकता है, अपनी दृष्टि विकसित कर सकता है। पंडित जी की गांधी जी और गुरु रवीद्रनाथ ठाकुर से निकटता तो जगजाहिर है, पंडित जी से दिनकर जी की कैसी निकटता और आत्मीयता थी, यह तथ्य इस पुस्तक में संकलित इकलौते पत्र में पूर्णता के साथ उभरता है, जो उन्होंने पंडित जी को लिखा। पत्र में वर्ष और मास तो अंकित नहीं है, किंतु यह स्पष्ट साक्ष्य है कि यह पत्र दिनकर जी ने तब लिखा था, जब उनकी प्रसिद्ध कृति 'उर्वशी' अपनी अपूर्णता के कारण उन्हें उद्विग्न कर रही थी, उनका स्वास्थ्य बाधाएं खड़ी कर रहा था और एक बेटी व पांच भतीजियों को ब्याह चुके होने के बाद भी एक बेटी व एक भतीजी को ब्याहने का दायित्व उनकी चिंता के आवरण को नित घनीभूत कर रहा था।

इस पत्र में दिनकर जी ने इन सब बातों को इतने खुलेपन और खुले मन से, विस्तार से लिखा, जिन्हें कोई धीर पुरुष किसी अत्यंत विश्वसनीय

और आत्मीय व्यक्ति से ही साझा कर सकता है।

1950 में वंशीधर विद्यालंकर को पंडित जी ने जो पत्र लिखा और जो इस पुस्तक में संकलित है, उसमें जनतंत्र के पौध को सींचने के लिए एक संपादक की चिंता और प्रतिबद्धता का प्रमाण तो मिलता ही है, संपादक नामक पीठ के भविष्य को लेकर बड़ी बरीक चिंता भी इसमें स्पष्ट रूप से उभरती है।

उसे पढ़ कर लगता है कि संपादक संज्ञा की गुणवत्ता का क्षरण उस युग में भी जारी था। पत्र के संचालक तब भी संपादकीय कर्म के महत्व को लेकर सीमित समझ रखते थे, आज तो कहना ही क्या। पंडित जी इस पत्र में लिखते हैं, 'डॉक्टर लोग पांच-छह वर्ष पढ़ने के बाद डॉक्टरी करते हैं। इंजीनियरों को भी कई साल विधिवत् अध्ययन करना पड़ता है। एकाउंटेंट भी कहीं-न-कहीं शिक्षा पाते हैं, पर संपादकों की शिक्षा का कोई प्रबंधन नहीं.' पत्र-लेखन विधा का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए ता ये दोनों पत्र बहुत ही उपयोगी हैं।

ये पत्र बताते हैं कि पत्र-लेखन क्यों और कैसे साहित्य की एक विधा है? इन दो पत्रों से स्पष्ट होता है कि इन पत्रों में ऐसे तत्व और तथ्य होते थे, जो पत्र लिखने वाले के जीवन-संघर्ष और कर्म-साधना, चिंतन और चिंता, दृष्टि और दर्शन तथा सामयिक साहित्यिक वातावरण के कई ऐसे साक्ष्य और सूत्र प्रस्तुत करते थे, जिन्हें उसके सृजित साहित्य में नहीं पाया जा सकता और उसके साहित्य के मूल्यांकन के लिए संदर्भ सूत्र देते हैं।

ये दोनों पत्र इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं कि पंडित जी का पत्र-लेखन की विधा को समृद्ध करने में अतुलनीय योगदान है। पत्र लिखना एक प्रकार से उनका प्रिय रचनाकर्म था। पंडित जी का पत्रकारिता में साक्षात्कार को विधागत समृद्धि देने में भी अप्रतिम योगदान है। इस पुस्तक में डॉ अलका चतुर्वेदी द्वारा लिया गया उनका साक्षात्कार (अंतिम साक्षात्कार) संकलित है। इसमें आठ प्रश्न हैं, जिनके उत्तर में पंडित जी के पत्रकारीय जीवन के आरंभ और उसके विस्तार तथा उनके चिंतन और विचारों के आयामों के सूत्र हैं। पुस्तक में पंडित जी का एक संस्मरण भी है 'प्रेमचंद के साथ अपने दो दिन', जिसके उत्तरार्ध में प्रेमचंद से उनके अनौपरिक साक्षात्कार का भी अंश है। साक्षात्कार के पांच घटक होते हैं, पहला प्रश्न, दूसरा प्रश्नकर्ता की मनसा, तीसरा प्रश्नकर्ता की मानसिकता, चौथा संदर्भ और पांचवां विचार। ये पांचों घटक पंडित जी के साक्षात्कार विधा को पुष्पित-पल्लवित करने के अभियान में खूब प्रतिष्ठित हुए। वे शहीदों की स्मृति के पुरस्कर्ता थे, इसे इस पुस्तक में संकलित अपने आलेख 'शहीदों की स्मृतियों के रक्षक' में कृष्ण प्रताप सिंह ने प्रभावशाली तरीके से पेश किया है।

ओरछा राज से पंडित जी का विशेष रिश्ता रहा। 1930 में उन्होंने ओरछा नरेश वीरसिंह जू देव के आमंत्रण पर टीकमगढ़ जा कर निर्विघ्न व निर्बाध संपादकीय अधिकारों के प्रति आश्वस्त भाव के साथ 'मधुकर' का संपादन किया। बाद में पत्र बंद हो गया, किंतु वहां से उनके रिश्ते का सिलसिला नहीं टूटा। ओरछा के पूर्व नरेश मधुकर शाह के आलेख में इसकी पुष्टि के सूत्र निहित हैं। महात्मा गांधी से उनकी निकटता, साबरमती आश्रम और फिजी में किये गये उनके कार्यों, शांति निकेतन के प्रति उनका आकर्षण, गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के प्रति आदर जैसे विषयों पर इस पुस्तक के आलेखों में पर्याप्त जानकारियां हैं। यह पुस्तक न केवल पत्रकारिता, बल्कि साहित्य से जुड़े लोगों और पाठकों के लिए भी उपयोगी है.

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारती

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, अक्तूबर—2022, RNI-50756

दस पुस्तकें जिनका लोकार्पण बसंत पंचमी, 26 जनवरी-2023 को तय है :

1. पुरुष व्यथा कथा : 2022
2. नारी व्यथा कथा : 2022
3. तीसरा पहलू : किन्नर कथा 2022
4. हिन्दी के श्रेष्ठ ग़ज़लकार : 2022
5. श्रेष्ठ कवयित्रियाँ : 2022
6. उत्कृष्ट कहानियाँ : 2022
7. उत्कृष्ट बाल कहानियाँ : 2022
8. श्रेष्ठ व्यंग्यकार : 2022
9. श्रेष्ठ लघुकथाकार : 2022
10. श्रेष्ठ महिला लघुकथाकार : 2022

1. पुस्तकों का प्रकाशन आंशिक लेखकीय सहयोग द्वारा प्रस्तावित है।
2. लघुकथा पुस्तक में एक रचनाकर के छः पृष्ठ निर्धारित होंगे।
3. कविता और ग़ज़ल पुस्तक में भी लेखक को छः पृष्ठ दिए जाएंगे।
4. रचनाओं को संपादक द्वारा चयनित किया जाएगा।
5. पुस्तक प्रकाशनोपरांत दो लेखकीय प्रतियाँ लेखक को प्रदान की जाएंगी।
6. पूर्व अनुरोध पर लेखकों को अधिक प्रतियाँ प्रकाशित मूल्य से 30% कम मूल्य पर दी जाएंगी।
7. लेखक को अपनी रचना का दो बार प्रूफ शोधन, प्रूफ प्राप्त होने के 7 दिन के अंदर करना होगा।
8. रचनाएँ मंगल अथवा यूनिकोड फॉन्ट में ही टाइप करके भेजी जाएँ।
9. रचनाकार, पासपोर्ट फोटो सहित अधिकतम 150 शब्दों में संक्षिप्त परिचय भेजें।
10. सभी पुस्तकों का प्री-प्रिंटिंग प्रोसेस 31 दिसंबर तक पूरा करने का लक्ष्य है।
11. रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेजी जाएंगी तो उनका प्रूफ शोधन जल्दी हो सकेगा।
12. अशुद्धियों से बचना प्रकाशन का प्रमुख लक्ष्य रहेगा।
13. पुस्तकों का लोकार्पण नई दिल्ली में ही प्रस्तावित है।

प्रकाशन सहयोग : saubhagyapublication@gmail.com

सहयोग 60/-